Chap-2

द्वितीय अध्याय

कार्यक्षेत्र एवं उपलब्धियाँ

कार्यक्षेत्र एवं उपलब्धियाँ

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी की डायरी का सहारा लेकर कार्यक्षेत्र एवं उपलब्धियों को प्रस्तुत कर रहा हूँ।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी दिनांक 14-03-72 को अपने कार्यक्षेत्र के लिए प्रस्थान किया। प्रात: 5:45 पर अहमदाबाद से दिल्ली जनता में सवार होकर दिल्ली गये। दिल्ली से असम मेल में इलाहाबाद और वहाँ से सुलतानपुर होते हुए विक्रमपुर अपने गाँव पहुँचे। (दिनांक 16-3-72) 17-3-72 को 2 बजे दोपहर को लम्भुवा से वाराणसी फिर वहाँ से मुगलसराय गये। यहाँ से 11:30 रात में मेल से बरौनी जं. पहुँचे। वहाँ मानसी के लिए गाड़ी बदलनी पड़ी। मानसी पहुँचकर सहरसा के लिए गाड़ी लेकर 18-3-72 को सहरसा 12 बजे दिन में पहुँचे। 18-19 के दो दिन के शिविर में जयप्रकाश जी ने समस्त आगन्तुक स्वयं सेवकों को कार्य करने की दृष्टि से परिचय कराया। सहरसा में पर देश के कोने कोने से लगभग 400 कार्यकर्ता आये थे। उनकी टोलियाँ तैयार की गई।

गुजरात से 32 भाई-बहन आये थे। उन्हें सहरसा जनपद के सिंहेश्वर प्रखण्ड

की जिम्मेदारी सौंपी गई। व्यथित जी और जेठाभाई श्रीमाली को मधेपुरा प्रखण्ड में भेजा गया। मधेपुरा में 7 पंचायतें थी। इन्हीं सातों पंचायतों से जमीन प्राप्ति, वितरण और सुलह शान्ति की जिम्मेदारी दी गई। 'व्यथित'जी के साथ दो स्थानीय कार्यकर्ता भी थे एक मधेपुरा प्रखण्ड के मठाही पंचायत के भूतपूर्व मुखिया मैनेजर मण्डल और अर्रहा पंचायत के हरिजन आगेवान अमोली राम। मधेपुरा प्रखण्ड का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार था। यादवों की बस्ती अधिक, क्षत्रियों की कम। भू-सम्पत्ति यादवों और राजपूतों के पास ही। प्रखण्ड में रोजी के लिए कोई उद्योग नहीं है। भूमिहीन मजदूरों की आबादी अधिक है। कोसी नदी का किनारा यहाँ गरीबी हद से ज्यादा है। जाति भेद, वर्गभेद, सीमातिक्रममित। भाषा मैथिली और बँगला मिश्रित है। इसे समझने में कोई दिक्कत नहीं है।

21-03-72 को डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी सबके साथ खोपैती पंचायत पहुंचे। यह मधेपुरा से 6 मील पर है। सवारी नहीं थी पैदल आना पड़ा। 10 बजे दिन में हरिजन कारीराम के यहाँ पहुँचे। वह गरीब आदमी था। यहाँ पर रोटी और नमक खाया गया। इस आदमी को सभी लोगों से भय सी लग रही थी। वह मन में चाहता था कि सभी वहाँ से कहीं और चले जाएँ। उसने कहा यहाँ आप लोगों को खतरा है। आप लोग बाबू दशरथ सिंह के यहाँ जायँ। बाद में सभी लोग मुखिया बाबू दशरथ सिंह के यहाँ गये। वे कहीं चले गये हैं ऐसा पता चला। सभी लोग उन्हीं के यहाँ 7 दीनों तक रुके रहे। यद्यपि वे थे घर पर ही, तथापि दहशत के नाते लोगों से नहीं मिले। जब सभी लोगों का उन्होंने अध्यनन कर लिया तब जाकर सातवें दिन प्रकट हुए।

बाबू दशरथ सिंह दिव्य और भव्य स्वरूप, पढ़े-लिखे, सज्जन और उत्साही, व्यक्ति थे, वे गाँव के सबसे धनाढ्य व्यक्ति थे। उनके पास हजारों एकड़ भूमि थी। उनके दो लड़के थे। दोनों समझदार और नेक हृदय थे। बड़े पुत्र श्री विजय कुमार सिंह और छोटे हरिश्चन्द्र सिंह थे। दोनों भले व्यक्तित्व के भी धनी थे। बाबू दशरथ

सिंह के पिता को गाँव के उग्रवादियों द्वारा कत्ल कर दिया गया था। इससे गाँव में आतंक और भय का वातावरण था। गाँव में एक मठ भी था। रात में वहाँ मठाधीश से काफी बातचीत हुई।

22-03-72 को गाँव के वर्तमान मुखिया कामेश्वर मण्डल व्यथित जी मिले। वह नौजवान, साम्यवादी, उग्रवादी विचारधारा का व्यक्ति था। मण्डल से कोई भी सहयोग नहीं मिला। दोपहर और शाम का भोजन बाबू दशरथ सिंह के यहाँ होता था। इन्होंने एक बीघे जमीन का दान पत्र भर दिया। शाम को श्री जेठाभाई श्रीमाली अपनी टुकड़ी की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए व्यथित जी के पास आये।

दिनाकं 23-3-72 को बाबू दशरथसिंह के यहाँ पड़ाव ही था। चैत राम नवमी की छुट्टी में घर आये प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक श्री कामेश्वर सिंह से परिचय हुआ। वे बड़े विनयी और उत्साही व्यक्ति थे। उनके साथ गाँव के टोलों और मुहल्लों में घूमे। स्थानीय बोल-चाल में कामेश्वर सिंह ने सभी लोगों के आने का लक्ष्य गाँव वालों से बताया। सबको 24-03-72 की शाम कार्यक्रम में आने को आमंत्रित किया। लोगों में नई जागृति सी आई और सभी लोगों को कार्यक्रमों के प्रति जिज्ञासा होने लगी। डॉ. व्यथित जी का जन सम्पर्क का कार्य भी विधिवत चलने लगा।

24-3-72 शुक्रवार प्रात: वाचन सत्संग के बाद जेठभाई का सुन्दर रामायण पाठ हुआ। उसके बाद गाँव में घूम-घूम कर लोगों ने सम्पर्क कार्य किया। व्यथितजी की तबीयत खराब थी परन्तु कार्य में कोई ढील नहीं। एक जन सभा का आयोजन किया गया। इसमें मात्र पास पड़ोस के लोग इकट्ठा हुए। बाबू दशरथ सिंह को किसी खास काम से मधेपुरा जाना था। उन्होंने जनसभा में 10 एकड़ भूदान का एलान करके प्रस्थान किया। लोगों ने उनसे कह दिया कि बिना काम पूरा किए हमें कहीं जाना नहीं है। यहीं पर बाबू साहब के बड़े पुत्र श्री विजय प्रताप सिंह से अनेक बातें हुई। वे वर्तमान व्यवस्था और लोगों के नैतिक पतन से अत्यन्त क्षुब्ध

थे।

25-3-72 शनिवार नित्य क्रियोपरान्त बाबू दशरथ सिंह से बात-चीत के दौरान 10 वीघे जमीन आदित्य बाबू दशरथसिंह तथा मुसम्मात तारादेवी ने देने का संकल्प लिया। जमीन का खाता खसरा और नम्बर के साथ कागज पत्र तैयार कराकर फार्म भरवा दिया गया। कामेश्वर सिंह अध्यापक ने भी 12 कट्ठा जमीन का दान किया। जमीन कुल 24 कुटुम्बों में बाँटकर दानपत्र भर कर रख दिया। गाँव के मेले में सत्य हरिश्चन्द्र नाटक का मंचन होनेवाला था। इसी समय जमीन के वितरण समारोह का आयोजन भी किया गया।

26-3-72 रविवार प्रात: से 12 बजे तक अधूरा कागज तैयार किया गया। गाँव में सबसे सम्पर्क उन्होंने किया। जमीन का मौका निरीक्षण भी कराया। सबको जमीन नाप कर सौंप दिया गया। खेतों में गेहूँ जमीन पाने वाले गरीबों ने काटा। उनमें अत्यन्त प्रसन्नता व्याप्त थी। मेले की सार्वजनिक सभा में जमीन का दान-पत्र एक-एक कर बाबू दशरथसिंह के हाथों वितरित कराया गया। वे पहले उन्हें जलेबी अपने हाथ से खिलाते और फिर उन्हें प्रमाण पत्र देते। इस विशाल मेले में इलाके के जनसमूह इकट्ठे थें। रात का समय 10 बजने को थे माइक पर स्टेज से डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी का जोरदार भाषण हुआ। कानून, कत्ल और करूणा का विश्लेषण अत्यन्त भाववाही जोरदार ढंग से किया। गाँववालों को बताया गया कि कानून ने सीलिंग का एक्ट बनाया। जमीन का मशला हल नहीं हुआ। कानून की सारी कड़ियाँ फेल हो गई। उग्रवादी भाइयों ने कत्ल का सहारा लिया। इससे गाँव घर की समस्या विकट से किकटतम होती गयी। आपसी विश्वास और भाईचारा का नाता खत्म हो गया। वैमनस्य की आग में आज सारे का सारा इलाका जल रहा है। फिर भी भूमि समस्या का समाधान नहीं निकल सका। अन्त में गाँधी, विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण के करूणा के सिद्धान्त की विजय हुई। इसके प्रतिक के रूप में व्यथित जी के मात्र विचार परिवर्तन और हृदय परिवर्तन का मंत्र के

कारण ही बाबू दशरथसिंह के परिवार ने 10 बीघा जमीन माँगने से दिया और डॉ. व्यथित जी ने 28 भूमिहीन परिवारों को वितरित किया। यही अहिंसा और करूणा की विजय है।

इस वक्तव्य का जन समुदाय पर इतना जोरदार प्रभाव पड़ा कि दूसरे गाँव के कुछ नवयुवकों मेले में लूटपाट करने आये थे वे अपने हथियार डालकर डॉ. व्यथित जी के शरण में आये। उन्होंने अपना मार्ग बदल दिया और डॉ. व्यथित जी के सहयोगी हो गए।

27-3-72 सोमवार व्यथित जी लोगों के साथ गढ़िया पंचायत गये। मधेपुरा क्षेत्र के तत्कालीन बी.डी.ओ. के साथ हरिविलास बहन तथा निर्मला बहन दोनों आई। एक सभा हुई। सभा के बाद भोजन हुआ। वहाँ कुछ जमीन भी मिली। शाम को खोपैती के लिए वापसी हो गई। कुल 5 बीघा जमीन मिली। उसे स्थानीय भूमिहीनों में वितरित किया गया। आज भूखा ही रहना पड़ा। महन्थ धरमदास के 2.1/2 वीघे भूमि का कागज बनाने का काम रह ही गया। व्यथित जी शाम 7 बजे हरिविलास बहन के साथ चना चबा कर रात बिताया।

28-3-72 मंगलवार को नित्याक्रियोपरान्त सरपंच के यहाँ व्यथित जी गये। वे गरीब थे। उन्होंने हृदय से डॉ. व्यथित जी का स्वागत किया। बहुत होशियार थे वे। गाँव के एक बूढ़े बनिये से सम्पर्क हुआ। वह बड़ा भावुक था। उसके पास मात्र थोड़ी भूमि थी। चालू राज्य तंत्र के प्रति वेदना थी। मास्टर योगेन्द्र बाबू से बातचीत हुई। उन्होंने शनिवार को बुलाया। बालम गढ़िया आकर सभी लोगों ने भोजन किया। रतनदास का सम्पर्क हुआ। वे अत्यन्त भावुक प्रकृति के थे। प्रभावित होकर 5 कट्ठे से एक कट्ठा जमीन दे दया। सभी लोगों ने उन्हीं के पुत्र को दान पत्र भर कर दिया। अन्त में मुखिया से व्यथित जी मिले। बहुत समझया बुझाया परंतु पसीजे नहीं। उन्हें ग्राम स्वराज्य के काम में कोई लगाव नहीं लगा।

29-3-72 बुधवार नित्यक्रिया सम्पन्न कर मुखिया के भाई से बातें हुई। वे

फौज से आये थे। रामचन्द्र नामक युवक से बातें हुई। शाम को खोपैती वापस आकर वहाँ के मठ महन्थ से खूब घनिष्ठता हुई। उनसे अनेक सन्दर्भो में बातें भी हुई। विद्यालय के शिक्षकों और बच्चों से मिलकर भले विचारों का आदान प्रदान हुआ। डॉ. व्यथित जी का तर्कपूर्ण एवं अकाट्य बातों का सब ने मन से सत्कार किया।

30-3-72 गुरूवार महन्थ वासुदेव दास की 2 वीघे जमीन का दान पत्र भरना तथा दाताओं को बुलाकर वितरण और दान-पत्र का आवेदन-पत्र ट्रस्ट के प्रमुख के नाम लिखा गया। 7 बजे डॉ. व्यथित जी खुद ही श्रीपुर ग्राम पंचायत पहुँचे, यहाँ यादव मुखिया तथा कई अन्य यादव नेताओं से बाते हुई साथ-साथ जाकर जन सम्पर्क कार्य भी किया। वहाँ के स्थानीय लोग विचारों से बहुत प्रभावित हुए। रात को देर तक चर्चा होती रही। विन्द्रश्वरी बाबू जो गाँव के मानिन्द थे, जमीन देने का वचन दिया। जगदम्बा यादव की प्रतीक्षा की जा रही थी परन्तु लौटे नहीं।

31-03-72 शुक्रवार नित्याक्रियोपरान्त सभी ने नाश्ता-पानी किया। फिर सभी लोक सम्पर्क में आगे बढ़ते गये। दोपहर को हरविलास बहन से भेंट हुई उसी समय जगदम्बा यादव जी से भेंट हो गई। अनेक राजनैतिक और सामाजिक बातें होती रही। अन्त में सायंकाल श्रीपुर वापस आ गये। यहाँ भूमिदान और ग्रामदान की अनेक बात चीत चलती रही। वर्तमान राजनैतिक आथिर्क समस्याओं का गाँव वालों के बीच में उद्घाटन का अच्छा मौका लगा। विचार-प्रचार में सभी को सफलता मिली।

01-04-72 शनिवार सबेरे नित्यक्रिया के तुरन्त बाद डॉ. व्यथितजी निकलकर मुखिया के यहाँ पहुँचे। उनके साथ घर-घर सभी लोग सम्पर्क किया। वहाँ से होते हुए बालम गढ़िया गये। वहाँ के सरपंच के यहाँ भोजन विश्राम किया। गाँव भर को इकट्ठा कर लगभग 11 परिवारों में 5.1/2 बीघा जमीन का वितरण

किया गया। शाम को श्रीपुर वापस आये, वहाँ जगदम्बा बाबू यादव की इन्तजारी में काफी समय दिया।

02-04-72 रविवार प्रात: 4-03 बजे उठकर व्यथित जी ने अर्रहा के लिए प्रस्थान किया। 4 मील पैदल चलकर मठाही में व्यथित जी ने में चाय-नाश्ता किया। यहाँ पर मैनेजर मण्डल से मिले। उन्होंने स्टेशन में स्टेशन मास्तर और अनेक अन्य लोगों से मिलकर बातचीत किया। वहाँ से आठ मील चलकर शत्रुधनसिंह के यहाँ पहुँचे। यहाँ उन्हें राहत मिली। वहाँ कुछ समय देकर विचार प्रचार का कार्य किया। दोपहर का भोजन भी वही पर किया। उस समय अमोली राम भी वहीं आ गये। शाम को वे फिर घर चले गये। रात के ग्यारह बजे फिर मुखिया जी आये। उनसे जो बातें हुई उनसे निराशा ही हाथ लगी। भूदान के सम्बन्ध में काफी चर्चायें हुई। बाबा विनोबा जी की भी बड़ी चर्चा हुई। मुखिया यद्यपि प्रभावित तो बहुत हुए तथापि अपने लड़के की उग्रता के कारण कोई ताल मेल नहीं बैठा पाये।

03-04-72 सोमवार नित्य क्रिया के बाद नाश्ता पानी करने पर दिल खोलकर मुखिया से अनेक बातें हुई। वे काफी विनम्र स्वभाव के थे। सर्वोदय विचार परिवर्तन की प्रक्रिया अत्यन्त धीमी होने का उन्हें दु:ख था। इस पर उग्रवाद हावी है। मठाही गाँव आकर मैनेजर और मुखिया को घर पर मिले। इधर उधर की अनेक बातें हुई। बातचीत में बजरंगी बाबू होशियार और परम प्रवीण थे। 4 बजे व्यथित जी भूख बर्दास्त न होने से एक राम बिरादरी के यहाँ माँग कर सत्तू खाये। वहाँ एक सभा हुई। ग्राम स्वराज की अनेक बातें हुई। लोग प्रभावित भी हुए रात में मैनेजर मुखिया के यहाँ निवास किये। दिनांक 12-04-72 को मिलने का वादा किया। मुखिया बड़े जमीदार थे। वे सम्पूर्ण ग्राम के लिए ग्रामदान को तैयार हो गये।

04-04-72 मंगलवार नित्यक्रिया के बाद डॉ. व्यथित जी मठाही बाजार में चाय नाश्ता किया। यहाँ से श्रीपुर के लिए प्रस्थान किया। जगदम्बा बाबू के यहाँ

आकर के दो-चार गाँव के खास लोगों से बातें किये। जगदम्बा बाबू अभी आये नहीं थे। दोपहर का भोजन, नहाना-धोना सब उन्हीं के यहाँ हो रहा था। अमोली राम भी वहाँ आ गये थे। उन्हें खोपैती ने भेजा था। योगेन्दर बाबू से यहीं पर व्यथित जी मिला। वे एम.ए.,बी.एड. भले व्यक्ति, सात्विक विचारों से सम्पृक्त जाने-माने व्यक्ति थे। उन्हें क्षेत्र में खेती की प्रगति, धन्धे, काम, गाँव की उन्नति के बारे में पर्याप्त चिन्ता रहा करती थी। उन्होंने अच्छा मान सत्कार किया। रात्रि का भोजन उन्हीं के यहाँ हुआ। कैलास मास्टर भी वहाँ मौजूद थे। अन्त में सफलता नहीं मिली। पुन: के लिए बातचीत हो गई।

05-04-72 बुधवार नित्यक्रम से निवृत होकर डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी जगदम्बा बाबू के यहाँ पुन: गये। दोपहर का भोजन जगदम्बा बाबू के यहाँ किया गया। व्यथित जी ने अपने घर पर अपनी कुशलता का पत्र लिखा। सन्त महात्माओं के सम्बन्ध में अच्छी अच्छी बातें हुई। सात्विक विचार के बाबू जगदम्बा सन्तों महात्माओं में आस्था रखते थे। अपने पिताजी की अनेक चमत्कारिक बातें करते थे किन्तु जमीन देने के प्रश्न पर आनाकानी कर दिया करते थे। वहीं एक सन्त से भी भेंट हुई। व्यथित जी के बातों से महात्मा काफी प्रभावित थे। रविवार के लिए आने को कहकर अमोली राम के घर चले गये। रात्रि में भोजन विश्राम यहीं हुआ। जेठाभाई को बुखार आ गया। व्यथित जी को गैस से सिर दर्द होने लगा। रात भर परेशान थे।

06-04-72 गुरूवार प्रात: श्रीपुर से मठाही के लिए व्यथित जी दोस्तों के साथ प्रस्थान किया। वहाँ जाकर मैनेजर मण्डल से सम्पर्क किया। उन्होंने वहीं चाय-पानी किया। व्यथित जी ने डाक्टर से जेठाभाई के लिए दवा लिया। एक आदमी से मठाई गाँव में मिलना आवश्यक था, वहाँ गये। वह अत्यन्त प्रभावित हुआ 5 कट्ठा भूमि बड़े आग्रह के के साथ दिया। मठाही से मानतेक्ठी गाँव गये। वहाँ एक हाईस्कूल था जिसमें गाँव के ही प्राचार्य श्री सत्यदेव मण्डल थे। उनसे

जाकर मिले। वे बड़े सरल और शालीन स्वभाव के थे। जेठाभाई श्रीमाली की तबीयत खराब थी। वे स्कूल पर ही आराम करते रहे। डॉ. व्यथित जी को भी गैस की तकलीफ थी ही। 4 बजे मैनेजर मुखिया आये। गाँव में मुखिया के यहाँ व्यथित जी आये। वहाँ हेडमास्टर सत्यदेव मण्डल, मुखिया जी तथा सम्भ्रान्त लोगों से बातचीत हुई। हेडमास्टर नौजवान एवं विचारवान व्यक्ति थे। रात में सर्वोदय के विचार की काफी चर्चा तथा देश की परिस्थिति का आकलन किया गया। चर्चा रात्रि 12 बजे तक चलती रही। यहाँ पर हर भला व्यक्ति गाँव की गंदी राजनीति से काफी दु:खी थे।

07-04-72 शुक्रवार नित्य क्रिया के बाद 'व्यथित' जी चाय नास्ता और भोजन के बाद मानतेक्ठी के मुखिया राजेन्द्र मण्डल से बातें हुई। स्वागत और सत्कार में खूब परन्तु काम काज की बात नहीं। जेठाभाई की तबीयत अधिक खराब हो गयी थी। उनके पेट में गड़बड़ी आ गई इससे काफी चिन्ता व परेशानी हो गई थी। इधर डॉ. 'व्यथित'जी को गैस से परेशानी थी ही। इतने पर भी मिलने का क्रम जन-जन से बनाये रखा। गंगा बाबू मण्डल व आनन्द प्रसाद और मास्टर जी का जमीन देने की एक राय बनी।

08-04-72 शनिवार नित्य क्रिया के बाद बुधवार का वादा करके मानतेक्ठी से पिपराही अमोली राम के घर डॉ. 'व्यथित'जी गये। 10 बजे स्नान भोजन आदि से खूब सत्कार किया। 11 बजे सिमरहा बाबू बद्री सिंह के यहाँ पहुँचने पर तुरन्त ही भोजन और उच्चकोटि का सत्कार उन्हें मिला। बुजुर्ग बाबू बद्री सिंह हिन्दी से पुराने परास्नातक थे। वे अत्यन्त निष्ठावान, व्यवहार कुशल थे। घर गृहस्थी और सर्वोदय सम्बन्धी अनेक बातें हुई। सब में उनका व्यवहारिक दृष्टिकोण स्पष्ट झलकता था। रात में जेठाभाई की तबीयत अत्यन्त खराब हो गई। डॉ. 'व्यथित'जी ने रात भर तेल मालिश किया। वे अत्यन्त घबरा गये परिवार या गुजराती समाज से मिलने की तीव्र इच्छा जाहिर करने लगे। उनकी उद्विग्नता इतना बढ़ गई कि

आभास होता था कि जिन्दा ही नहीं रहेंगे।

09-04-72 रविवार सबेरे उठकर डॉ. 'व्यथित'जी ने जेठाभाई की हालचाल पूछे वे मधेपुर जाने को पूर्ण तत्पर थे। बद्रीनाथ से कहकर बैलगाड़ी की व्यवस्था की गई। उन्हें लेकर डॉ. 'व्यथित'जी मठाही स्टेशन गये। वहाँ से ट्रेन द्वारा मधेपुरा पहुँचे। यहाँ आकर हरिविलास बहन के साथ श्री कृष्ण राजभाई से कार्य के अनुभव सम्बन्धी बातें हुई। वे अत्यन्त प्रभावित हुए। 25 बीघे 12 कट्ठे जमीन के वितरण की बात से अत्यंत खुश हुए। नाश्ते के बाद डॉ. 'व्यथित'जी सिंहेश्वर गये, जेठाभाई की तबीयत ठीक हो गई। शाम को गुजरात से आये सभी कार्यकर्ता मित्रों के साथ परस्पर मिलकर बातें हुई। गुजरात प्रदेश से आये हम सभी कार्यकर्ताओं के नेता द्वारका जोशी तथा अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं डॉ. 'व्यथित' जी के कार्य और सफलता की दिल से प्रशंसा की, क्योंकि डॉ. 'व्यथित' जी के अलावा और किसी को इतनी जमीन नहीं मिल सकी थी। वे लोग सिर्फ विचार प्रचार के काम ही किये थे जब कि डॉ. 'व्यथित'जी उस समय तक 25 बीघा 12 कट्ठा जमीन भूदान में लेकर उसका विवरण भी पात्र लोगों को सौहार्दपूर्ण वातावरण में कर चुके थे। बाद में डॉ. द्वारका दास जोशी के आग्रह डॉ. 'व्यथित'जी ने एक घन्टे तक अपने कार्य करने का तरीके को व्याख्यायित किया। उस समय श्रीपुर के ध्रुवकुमार का जिक्र किया जिसके ऊपर खोपैती में मेले के अवसर पर रात्रि में भूदान सम्बन्धी मेरे भाषण का चमत्कारिक प्रभाव पड़ा था। जिससे उसने और उसके साथियों ने मेले में लूटपाट न करके डॉ. 'व्यथित'जी के साथ मिलकर सर्वोदय एवं भूदान, सत्य, प्रेम, करुणा का काम करने का संकल्प लिया। इन सभी बातों से हमारे गुजरात के भाई-बहन खूब प्रभावित हुए। दोपहर को गुजराती ढ़ंग का भोजन सभी ने किया। डॉ. 'व्यथित'जी ने कपड़ा धोया शाम की प्रार्थना के बाद खिचड़ी साग का भोजन किया। इसके बाद सभीने विश्राम किया गया।

10-04-72 सोमवार नित्य क्रियोपरान्त प्रभाव फेरी की गई। गुजरात के

सभी भाई बहन कोशी वैरेज देखने आये। आठ बजे प्रात: बस से कोशी बाँध के लिए प्रस्थान किया गया। कोशी बाँध सिंहेश्वर से 50 मील दूर था। रास्ते में दो बार बस का टायर फट गया। अन्त में बस छोड़कर 6 मील पैदल चलकर सभी लोग कोशी पहुँचे। डेढ़ बजे सभी लोग कोशी बाँध पर पहुँच गये। पूड़ी और चबैना का नाश्ता पानी हुआ । कोशी नदी का विशाल सागर जैसा लहराता स्वरूप 56 विशाल फाटकों का बैरेज एक फाटक लम्बाई 16 गाज थी। उस समय पानी निकलने के दो फाटक खुले हुए थे। मछुवारे बड़ी-बड़ी मछलियाँ जाल डाल कर पकड़ रहे थे। पानी का द्रुत प्रवाह भयंकर निनाद दिशाओं के छोर को अनुगुंजित कर रहा था। यह बाँध भारत-नेपाल की सीमा पर बना है। इसका दृश्य अत्यन्त रमणीय है। 4 बजे से चलकर 60 मील दूर सत्तरी जिले के राज विराज नगर जो नेपाल में है, शाम 6 बजे सभी लोग वहाँ पहुँचे। वहाँ हनुमान मन्दिर में ठहरने का कार्यक्रम बना। उसके बाद भारतीय रूपये को नेपाली मारू में बदलने के उद्देश्य से डॉ. 'व्यथित'जी बैंक गये। 1 रूपये का मूल्य उस समय 1.39 मारू होता था। मन्दिर से महाराजा महेन्द्र क्लब में 10 बजे रात को जाकर सभी लोग सोये।

11-04-72 मंगलवार नित्यक्रिया प्रार्थना सम्पन्न करके सभी ने चाय-पानी किया । प्रात: 9-30 तक नगर भ्रमण विदेशी वस्तुएँ जैसे चीन, जापान, जर्मनी, रूस की चीजें काफी सस्ती थी। कपड़े का व्यापार मुख्य रूप से था। डॉ. 'व्यथित'जी ने नेपाल से श्री वीनूभाई अमीन एवं श्रीकृष्ण शुक्ल के लिए कुछ उपहार खरीदा। डॉ. 'व्यथित'जी नेपाल से घर पर चाचा के नाम कुशल क्षेम का पत्र डाला। यह यात्रा डॉ. 'व्यथित'जी की सबसे रोचक यात्रा रही। उन्होंने विदेश भ्रमण का अपूर्व आनन्द प्राप्त किया। यहाँ से 10:15 पर सभी लोग सिंहेश्वर के लिए बस द्वारा रवाना हुए। राज विराज एक अच्छी जगह है। यहीं पर राजा त्रिभुवन का भव्य स्मारक है। इस समय नेपाल की जन संख्या एक करोड़ नौ लाख है। इसको सुविधा के लिए पचहत्तर जिलों में बाटा गया है। राजा विराज से कोशी बाँध

होत हुए सभी लोग सिद्धेश्वर 7 बजे शाम को पहुँचे। सभी लोग खूब थके और भूखे थे। सभी को रात में खिचड़ी खाने को मिली।

डॉ. द्वारका दास जोशी का चिन्तन, ग्राम स्वराज की विस्तृत चर्चा की गई। भक्ति के विषय में अनेक सन्दर्भों में चिन्तन और मंथन होता रहा। जनसंख्या वृद्धि और जमीन की उत्पादकता बढ़ने से जमीन निकालना कठिन हो रहा था। जन संपर्क से ऐसा आभास होने लगता है।

12-4-72 बुधवार प्रात: उठकर नित्यक्रिया से निवृत होकर सभी लोगों ने बासी खिचड़ी का नाश्ता किया। व्यथित जी और निर्मला बहन सेठ के साथ मधेपुर रिक्शा में आये। हरिविलास बहन से मिलकर स्टेश्न और फिर मठाही के लिए प्रस्थान किया। वहाँ से भानतेक्ठी विद्यालय पर पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार प्राचार्य और दूसरे शिक्षकों से मिलकर बातचीत किया। सत्यदेव मण्डल हेडमास्टर ने सर्वोदय मण्डल अहमदाबाद तथा डॉ. 'व्यथित'जी का पता लेकर सर्वोदय मित्र बनने की प्रबल आकांक्षा प्रस्तुत किया। इसमें ऐसा होता है कि घर में एक पात्र में नित्य नहा धोकर एक मूठी अन्न अथवा एक रूपया रखा जाता था। इसका उपयोग समाज के हित के लिए किया जाता था। अमोली राम के यहाँ आकार रात में विश्राम किया गया। वहाँ से 4 बजे प्रात: उठकर बाबू बद्री सिंह के यहाँ आया गया।

13-04-72 बृहस्तपिवार नित्य क्रिया के बाद बाबू बद्रीसिंह ने यह कहा कि आप लोग आस पास घूम आयें तब तक जमीन देने के प्रश्न पर सभी आपस में आस्वस्त होंगे। भेलवा के सरपंच के यहाँ सभी लोग गये। उनसे बातें हुई। सभी शिक्षक और विद्यार्थी बहुत प्रभावित रहे। प्रात: प्रभात फेरी करने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थी की तरफ से प्रस्ताव आया। 14-4-72 को हरविलास बहन और एस.डी.ओ. की मीटिंग का प्रस्ताव विद्यालय पर रखने की बात निश्चित की गई। हेड मास्टर हितेन्द्र चौधरी का विशेष आग्रह। वहाँ से लौट कर भोजन और आराम

कियो गये। 3 बजे अमोली राम आए और उनके साथ में पिपराही जाना निश्चित किया गया। उनके घर के लोगों से वार्ता करना आवश्यक था। भूमि की समस्या की वार्ता करना। शाम को बद्री बाबू के यहाँ वापस भोजन और आराम सभी ने किया।

14-4-72 शुक्रवार नित्यक्रिया के बाद सवा 5 बजे मेलवा स्कूल पर डॉ. 'व्यथित'जी पहुँच गये। बच्चे कम थे। अध्यापकों में हेड मास्टर को छोड़कर और कोई नहीं आया। 45 मिनिट रुककर हेड मास्टर से बातें और मिटिंग की पूरी जिम्मेदारी सौंप कर डॉ. 'व्यथित'जी बद्री बाबू के यहाँ वापस आ गये। यहाँ पहुँच कर नाश्ता और भोजन किये। आराम करने का क्रम चल ही रहा था कि अमोली राम आ गये। साथ-साथ पिपराही भी जाना पड़ा। वहाँ घर-घर जाकर जमीन की बात का क्रम था। यही से भानतेक्ठी की मीटिंग में भी जाने की तैयारी की गई थी। सभा में हरविलास बहन के आने की प्रतीक्षा थी परन्तु कुछ कारण से वे मीटिंग में नहीं आ सकी। 6-30 बिसराहा वापस जाने के बाद भोजन और विश्राम हरिविलास बहन के न आने से सभी निराश होकर अपने-अपने घर का मार्ग लिया।

15-4-72 शनिवार प्रात: नित्यक्रम के पश्चात् चाय-नाश्ता करने के उपरान्त हरिविलास बहन तथा निर्मला बहन का बद्री बाबू के यहाँ आगमन हो गया। वहाँ से मेलवा तेजनारायण यादव के यहाँ सभी लोग गये। यहीं पर नाश्ता पानी की व्यवस्था की गई। वापस आकर बद्री बाबू से जमीन की बात की गई। वे तीन बीघा भूमि देने को राजी। हरिविलास बहन तथा निर्मला बहन ने वहाँ से प्रस्थान किया। जेठालाल श्रीमाली का यहाँ आना। दिनभर जमीन का वितरण-पत्र भरना। यहाँ पर सभी लोग रात में भोजन विश्राम किया।

16-04-72 रविवार प्रात: नित्यक्रम के पश्चात् प्रात: 9 बजे तक प्रमाण-पत्र वितरण के पश्चात् स्नान किया गया फिर भोजन करके भानतेक्ठी के लिए बैलगाड़ी में प्रस्थान किया गया। व्यथित जी भानतेक्ठी में अनन्त प्रसाद यादव के

यहाँ रात का भोजन करके उनके लड़के श्री हरिवंश से विस्तृत वैचारिक क्रांति की बातें की। शाम को भोजनोपरान्त मठाही में गाँव में ताने बाबू के यहाँ भी गये। व्यथित जी ने काफी महेनत के बाद उन्हें भी जमीन दान के लिए राजी कर सके। 15-4-72 को यहाँ रूकने की बात की गई। रात्रि विश्राम।

17-4-72 सोमवार नित्यक्रिया सम्पन्न कर 5-30 सबेरे व्यथित जी गंगा राम भाई से मिलने के लिए गये। गंगाराम ने 5 कट्ठा 19 धुर जमीन दिया। 2 कट्ठा 15 धुर सत्यदेव मास्टर ने दिया। गंगाराम के यहाँ चाय-नाश्ता हुआ। डॉ. 'व्यथित'जी वहाँ से अनन्त राम यादव के यहाँ आये। बातें तो खूब किये परन्तु फल शून्य। स्नान, भोजन और विश्राम किया। 1-30 बजे मठाही ग्राम के लिए प्रस्थान किये। ताने प्रसाद यादव मुखिया के यहाँ जो बड़ा ही बातूनी धूर्त जैसा आदमी है। उसके नाते ही मीटिंग असफल। 5-30 बजे डॉ. 'व्यथित'जी परेशान होकर बाजार की तरफ वापस आये। मैनेजर मण्डल से बातचीत किया। साथ-साथ घूमकर जागृति सम्बन्धी सद्साहित्य को बेंचने का काम किये। ताने भाई के यहाँ वापस सभी लोग। बहुत रात गये भोजन मिला वहीं सभी ने विश्राम किया गया।

18-4-72 मंगलवार नित्यक्रिया सम्पन्न कर ताने बाबू से बात करने के लिए सभी लोग बैठे। ताने बाबू बराबर आनाकानी करते रहे। सभी लोग नाश्ता पानी किया। 10 बजे जमीन का फार्म भरना आरम्भ किया। 1 बजे तक आदाताओं को बुलाकर हस्ताक्षर कराया गया। 11 आदाताओं को 1 बीघा 12 कट्ठा जमीन का वितरण किया। भोजनोपरान्त उकाही बाजार में व्यथित जी मैनेजर मण्डल से मिले। अमोली राम घोखेबाज सहयोगी के रूप में उभर कर सामने आये। वह डॉ. 'व्यथित'जी के कुछ रूपये लेकर चम्पत होने का जो उपक्रम किया वह उसी के लिए ही उपयुक्त रहा होगा। बस से दो बजे मधेपुरा पहुँचने का उपक्रम किया गया। वहाँ से फिर डॉ. 'व्यथित'जी सिद्धेश्वर आये। सिद्धेश्वर से फिर मधेपुरा शहर में क्रान्ति दिन का उत्सव का आयोजन हुआ। डॉ. 'व्यथित'जी को भी '7 मिनट का

समय दिया गया। सारी सभा में डॉ. 'व्यथित'जी का प्रवचन का अच्छा प्रभाव पड़ा। सभी प्रसन्न थे।'

डॉ. 'व्यथित'जी नौ बजे रात में मुरहौ मुखिया के यहाँ जीप से गये। वहाँ से मधेपुरा हलधर वकील के यहाँ भोजन किये। वहाँ खादी भण्डार में जाकर व्यथितजी मैनेजर और कार्यकर्ताओं से भी भेंट की।

19-4-72 बुधवार नित्यक्रिया से निवृत होकर डॉ. 'व्यथित'जी ने हरिविलास बहन से भूदान जमीन का हिसाब किया। फिर सिद्धेश्वर आ गये। डॉ. 'व्यथित'जी की टुकड़ी के कुल काम का हिसाब इस प्रकार रहा-

भूमिदाता सं.	प्राप्तभूमि	वितरितभूमि	आदाता सं.	ग्राम सं.
24	35 बीघा	30 बीघा	102	10

उपर्युक्त सारणी के अनुसार भूमिदानी 24 ने भूमि दिया। उनका 35 बीघा भूमि मिली। यह भूमि 102 आदाताओं में बाँटी गई। 6 न्याय पंचायतों के 10 ग्रामों में काम किया। 5 बीघे जमीन वितरण पत्र नहीं भरा जा सका।

डॉ. 'व्यथित'जी सिंहेश्वर में आकर स्नान किये। स्नानोपरान्त लड्डू, पूड़ी सब्जी तथा अन्य अनेक वस्तुएँ खाने को मिली। भोजन के बाद जल्दी में ही मधेपुरा के लिए चल दिये। डॉ. 'व्यथित'जी हरिविलास बहन तथा निर्मला बहन के साथ जीप में बैठकर निकले। मधेपुरा में आकर यहाँ की मिली कुल जमीन का टोटल किया गया। यहाँ कुल करीबन 60 एकड़ व्यवस्थित वितरण और बीस बीघा का अधूरा वितरण रहा। इस प्रकार 90 एकड़ भूमि का काम रहा। शाम के तीन बजे जनरल स्कूल के सभा में डॉ. 'व्यथित'जी को अपने विचार को व्यक्त करने का मौका दिया गया। हरिविलास बहन, निर्मलाबहन, डॉ. द्वारकादास तथा अन्य सभी कार्यकर्ताओं पर डॉ. 'व्यथित'जी का काम का अच्छा प्रभाव रहा। सभी डॉ. 'व्यथित'जी से खूब प्रसन्न थे। डॉ. 'व्यथित'जी की काफी तारीफ हो रही थी। डॉ.

'व्यथित'जी हिसाब किताब पूर्ण कर रात्रि 10 बजे मधेपुरा से घर के लिए ट्रेन द्वारा रवाना हो गये। कोसी बैल्ट से बरौनी और बरौनी से पटना आये।

20-4-72 गुरुवार पटना में डॉ. 'व्यथित'जी 2-30 बजे से 2-30 घंटे तक गाड़ी का इन्तजार करते रहे। गाड़ी मिली मधेपुरा से मुगलसराय तक रु.16-50 किराया लगा था।

इस प्रकार भू-दान अभियान के पुण्य पर्व की अवधि समाप्त हुई। सभी लोग बहुत बहुत अनुभव लेकर वहाँ से रवाना हुए। डॉ. 'व्यथित'जी के हृदय में अपूर्व उल्लास था और मन में कार्य करने की अद्‌भुत लगन। डॉ. 'व्यथित'जी ने मन में अनेक नये-नये कार्यक्रमों की रूपरेखा बनती और पैदा करती लगन, निष्ठा और अपूर्व ओज। इत्यलम् (सबको सन्मित दे भगवान)

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी अनेक शिक्षण-संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। ये सच्चे अर्थो में शिक्षक हैं। शिक्षा जीवन का मूल है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में अन्तनिर्हित मानवीय गुणों एवं विशेषताओं को उजागर किया जाता है। समुचित शिक्षा के द्वारा ही समाज, देश एवं विश्व का पुन:निर्माण संभव हो सकता है। इसीलिए डॉ. 'व्यथित'जी ने शिक्षण-कार्य को अपनाया। अपने शिक्षण एवं सत्साहित्य सृजन के द्वारा ये समाज में वैचारिक क्रान्ति लाकर उसकी विसंगतियों को दूर कर समाज का पुनःनिर्माण करना चाहते हैं। इन्होंने अनेक शिक्षण-संस्थाओं का सृजन एवं संचालन किया है। सम्प्रति ये गुजरात हिन्दी विद्यापीठ ओढ़व (अहमदाबाद) के कुलपति हैं। ऐसे महत्वपूर्ण एवं व्यस्त पद पर स्थापित रहकर जनसेवा एवं साहित्य सृजन के लिए समुचित समय निकाल पाना डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी जैसे साधक के लिए ही संभव है। डॉ. 'व्यथित'जी गगन विहारी एवं कल्पनाजीवी साहित्यकार नहीं हैं। इन्होंने जीवन को काफी निकटता से देखा है। ये माटी से जुड़े साहित्कार हैं। इनके जीवन में सिद्धान्त एवं व्यवहार दोनों का सामंजस्य है। इनकें जीवन का अधिकांश समय गुजरात में बीता है। इन्हें गुजरात के आदिवासी जीवन में विकास

एवं शिक्षा का अभाव दिखाई पड़ा। इन्होंने आदिवासियों एवं पिछड़े लोगों के सम्यक् विकास के लिए कई पाठशालाएँ स्थापित की, जिसके लिए उन्हें कई प्रकार की यातनाएँ झेलनी पड़ी। डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी कर्ममार्ग के सच्चे पथिक हैं। ये अपनी धुन के पक्के हैं।

इनका संकल्प पर्वत की तरह अचल है। मार्ग की भीषण बाधाएँ भी इनकी गति को रोक नहीं सकती। ये हर संकट और तूफान का सामना करते हुए सदा मानवता की सेवा में संलग्न रहे हैं। ये स्वयं कई बार गुजरात में साम्प्रदायिक दंगों की आग में झुलस चुके हैं। उन विषम परिस्थियों में भी ये अपनी चिन्ता छोड़कर दुसरों के दु:ख से 'व्यथित' होकर पीड़ित मानवता की सेवा करते रहें।

एक प्रतिष्ठित रचनाकार होने के साथ-साथ डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी एक कुशल, अनुभवी एवं सिद्ध-हस्त सम्पादक भी हैं। हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार, नवोदित रचनाकारों को उत्साहित करने तथा पौढ़ रचनाकारों को सम्मानित करने के उद्देश्य से 1993 ई. से ये 'रैन बसेरा' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का सम्पादक प्रकाशन कर रहे हैं। इस समय हिन्दी मासिक पत्रिका 'रैन बसेरा' अपनी शैशवावस्था का दस वर्ष सफलता पूर्वक पूर्ण कर लघुपत्रिकाओं की भीड़ में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित कर चुकी है।

'व्यथित'जी का संपादन अत्यन्त प्रभावशाली, सटीक एवं सारगर्भित होता है। इनके संपादन का पारस स्पर्श पाकर नवोदित रचनाकारों की रचनाओं में पूर्णता, लालित्य एवं प्रभावोत्पादकता का संचार हो जाता है, वहीं प्रतिष्ठित रचनाकारों की रचनाएँ भी अधिक निखर उठती हैं। संपादन कला में डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी की तुलना आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से की जा सकती है।

जिस प्रकार द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी की अपूर्व सेवा की थी, उसी प्रकार 'व्यथित'जी 'रैन बसेरा' के माध्यम से हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास परिमार्जन एवं प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। 'रैन बसेरा' के सम्पादन-

प्रकाशन के द्वारा व्यथित जी ने हिन्दी का प्रचार-प्रसार तो किया ही है, साथ ही रचनाकारों के परिमार्जन एवं मार्गदर्शन का गुरुतर कार्य भी संपन्न किया है। इनकी संपादन-कला की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी कम होगी।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी एक सच्चे संत भी हैं। उन्होंने कभी भी 'अर्थ-कामना' या 'यश-कामना' से प्रेरित होकर साहित्य-सृजन नहीं किया है। इनका आदर्श है- **''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन॥''** ये सदा निष्काम भाव से कर्म करते हैं। कर्म-फल में इनकी लिप्सा नहीं रहती। पर फल तो सदा कर्म का अनुगामी होता है। जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। 'व्यथित'जी के विशिष्ट एवं उल्लेखनीय साहित्य सेवा के लिए उन्हें अनेक साहित्यिक सम्मान मिल चुके हैं।

डॉ. 'व्यथित'जी की रचनाएँ अनुभूति पूर्ण होती हैं। अपनी रचनाओं में इन्होंने जीवन की सहज अनुभूतियों को प्रभावोत्पादक ढंग से अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। जीवन और जगत् को काफी निकट से देखने के कारण इनकी रचनाओं में जीवन का बहुआयमी चित्रण हुआ है। डॉ. 'व्यथित'जी का काव्य एक विकासशील काव्य है। जिस प्रकार बचपन से वृद्धावस्था तक किसी व्यक्ति में परिवर्तन और विकास की स्थितियाँ होती है, इनके काव्य में भी वही बातें दिखाई देती हैं। इनकी रचनाओं की पृष्ठभूमि पौराणिक और आधुनिक दोनों है।

1997 मार्च 30-31 को उत्तर प्रदेश सुलतानपुर जनपद की छोटी-सी बाजार सम्भूगंज में अयोजित विराट सर्वधर्म सन्त सम्मेलन का विवरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा-प्रतिदिन हजारों की संख्या में नर-नारी-बाल-वृद्ध सभी सम्मेलन में पधारे, सन्तों के दर्शन करते रहे व प्रवचन का लाभ लेते रहे। सभी के हृदय में एक ही भाव दिखता था कि **'सन्त मिलन को जाइए, ताजि माया-अभिमान।'** आज के इस भौतिकवादी युग में जहाँ जन-मानस आध्यात्मिकता से परे होता जा रहा है। धर्म-संस्कृति और ईश्वर से निष्ठा समाप्त होती दिखाई दे रही है, स्वार्थपूर्ति हेतु

घर-परिवार व देश को भी गिरवी रखने में संकोच नहीं हो रहा है, ऐसे समय में इस प्रकार के 'सन्त-सम्मेलन' की उपादेयता अधिक ही दिखती है।

'व्यथित'जी के व्यक्तित्व में, वर्तमान परिस्थितियों-समस्याओं-दुर्दशाओं के प्रति पर्याप्त आक्रोश-रोष-करुणा-चिन्ता-चिन्तन-घुटन-व्यथा जैसे भाव गहराई तक भरे पड़े मिलते हैं, जिन्हें हम आपके लेखन-सम्पादन में भली-भाँति अध्ययन करने पर अभिव्यक्त पाते हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि व्यथा आपकी अपनी व्यक्तिगत नहीं, पर समष्टि हित है। समाज-राष्ट्र-विश्व के प्रश्नों को लेकर आपने जो अवरित चिन्तन किया, वक्तव्य दिया, लिखा, इन सब में आपका न केवल सुधारक रूप, अपितु मनीषी रूप भी उभर कर सामने आता रहा है। समय-समय पर आपने युग के अनुरूप जो शिक्षण-प्रशिक्षण दिये, परामर्श-पथदर्शन दिये, इन सब ने भी आपकी छवि न केवल शिक्षक-उपदेशक की, बल्कि युगाचार्य-ऋषि-तपस्वी की-सी अंकित कर दी है।

आज के पतनोन्मुख विद्यार्थी, युवक-युवती, व जन समाज के उद्धार एवं उन्नति के लिए नीतिशास्त्र-धर्मशास्त्र की, विशेषत: 'मानस' की शिक्षा महिमान्वित हो सकती है, ऐसे अमूल्य सुझाव आपकी अन्तर्व्यथा के सागर-मन्थन की मणि भौतिक निष्पत्ति है।

सामाजिक विषमताओं के उन्मूलन का सार्थक प्रयास:- डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी का जीवन पूज्य बापू एवं विनोबा जी के सर्वोदयी विचारधारा से अनुमानित है। इसी भावना से प्रेरित होकर साहित्य साधना के साथ-साथ उनके कदम सामाजिक सेवा की ओर स्वत: बढ़ चले। गुजरात में उन्होंने जिन सामाजिक विसंगत्तियों को देखा और अनुभव किया उनके निदान में उनके द्वारा कृत प्रयास सराहनीय है। व्यथित जी के शब्दो में -''मुझे सन्त विनोबा का सान्निध्य प्राप्त होने का गर्व है। मैं पवनार आश्रम के कई कार्यक्रमों में सहभागी रहा हूँ। भूदान आन्दोलन के दौरान मुझे गुजरात, उत्तर प्रदेश और बिहार के दुर्गम ग्रामिण क्षेत्रों में दूर तक पदयात्रा करनी

पड़ती थी। सामन्ती तत्त्वों ने मुझे बहुत परेशान किया। मैने इस दौरान गरीबी, भुखमरी और बेरोंजगारी की भयावहता को नजदीक से देखा।''

अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार:- डॉ. जयसिंह व्यथित जी ने अहिन्दी भाषी क्षेत्र अहमदाबाद में हिन्दी भाषा कें प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी के प्रति लोगों में आस्था व विश्वास जगाने का सफल प्रयास भी हिन्दी माध्यम की शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना किया। आपने अहमदाबाद से अक्टूम्बर 1993 में 'रैन बसेरा' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन कर अहिन्दी भाषी प्रान्त में हिन्दी की अखण्ड ज्योति को प्रज्ञवलित किया है। अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के विषय में वह स्वयं कहते हैं- 'बापू हिन्दी के पक्के हिमायती थे। मुझे गुजरात में हिन्दी का प्रचार-प्रसार नाम मात्र को दिखाई पड़ा। मैंने सीमित आय तथा जनसहयोग के बल पर हिन्दी प्रचार-प्रसार की चार संस्थाएँ स्थापित की। अहिन्दी भाषी गुजरात सहित अन्य प्रान्तों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार नव-लेखकों को उत्साहित करने तथा प्रौढ़ रचनाकारों को सम्मानित करने के लिए 'रैन बसेरा' हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया।'

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में व्यथित जी का योगदान:- डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य योगदान है। उनके साहित्यिक कृतित्व की चर्चा के बिना 'व्यथित'जी के व्यक्तित्व को गहन रूप में नहीं समझा जा सकता है। अब तक इनके बीस गद्य से अधिक एवं पद्य ग्रंथों का सफल प्रकाशन हो चुका है। जिसमें से दो ग्रंथों को **'गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी'** ने पुरस्कृत भी किया है। व्यथित जी द्वारा रचित 'नेताजी' नामक खण्ड काव्य को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने पुरस्कृत किया है। हाल में ही अवधी बोली में दोहों की रचना कर 'दोहा-सतसई' की प्राचीनतम परम्परा को भी पुनर्जीवित किया है। अपने साहित्यिक योगदान के लिए अनेक कृतियों में 'व्यथित'जी को साहित्यिक सम्मान प्रांप्त हो चुका है वे 'दलितो का मसीहा' (हिन्दी-गुजराती) नामक प्रबन्ध-काव्य के लेखन

के लिए 1992 ई. में गुजरात विधान सभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री मनुभाई परमार द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी, डॉ 'व्यथित' जी काव्य-रचना 'युग-चिन्तन', तथा 'बुढ़ापे की लकड़ी' (लघुकथा-संग्रह) को पुरस्कृत कर चुकी है। देश की अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं ने डॉ. 'व्यथित'जी की साहित्यिक उपलबिधयों का आकलन कर उन्हें मानद् उपाधियाँ दी है, जिनमें डॉ. आम्बेड़कर राष्ट्रीय अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन द्वारा 'कवि सन्त रैदास कविरत्न' विक्रमशिला विद्यापीठ, भागलपुर द्वारा 'विद्यावाचस्पति' अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा द्वारा 'राष्ट्रभाषा रत्न' अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन, भागलपुर द्वारा 'हिन्दी साहित्य मार्तण्ड' तथा साहित्यालोक, प्रतापगढ़ द्वारा 'साहित्यश्री' उल्लेखनीय है।

बहुत कम लोगों को अपने जीवन काल में स्वयं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर महाकाव्य का वर्ण्य विषय होने का गौरव प्राप्त होता है। आम्बेडकर नगर के सिद्ध कवि डॉ. कोमल शास्त्री ने डॉ. व्यथित की विविध आयामी एवं जनोपयोगी सेवाओं पर आधारित 'कर्मयोगी' नामक पौढ़ महाकाव्य रचकर, उनकी साधना और तपस्या पर कवि समाज की स्वीकृति की मुहर लगा दी है।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी अपने हिन्दी साहित्य के माध्यम से मानव मूल्यों को जीवंतता प्रदान करने का सराहनीय प्रयास:-पाश्चात सभ्यता एवं भौतिकता की अंधी दौड़ में आज का मानव अपने जीवन मूल्यों से दूर होता जा रहा है। यही कारण है कि मानवीय सम्बन्धों का विघटन हो रहा है। सदाचार, आत्मीयता, समरसता, सहजता, परोपकार और सत्यता आदि जीवन मूल्य मानवीय जीवन से स्वत: लुप्त होते जा रहे हैं। अत: 'व्यथित'जी ने अपने साहित्य के माध्यम से एक बार पुन: इन्ही लुप्त होते मूल्यों को पुनर्जीवित करने का सराहनीय प्रयास किया है।

युवाओं को प्रोत्साहन:- आज युवा शक्ति का दिनों दिन खास नजर आ रहा है। जिस शक्ति का प्रयोग सर्जनात्मक एवं रचनात्मक चिंतन में होना चाहिए वह पथ

भ्रमित हो गई है। अत: डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी ने अपने देश के युवाओं से जो अपेक्षा की है, उन्ही के शब्दों में-''मेरी युवा शक्ति से अपेक्षा है कि वह जनसेवा और राष्ट्रसेवा को जीवन का प्रधान लक्ष्य समझे, और वह सद्साहित्य के सृजन, संवर्धन एवं संरक्षण को महत्व नहीं मूर्तरूप दे।''

डॉ. 'व्यथित'जी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान:- डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी को कई शिक्षण-संस्थाओं को स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है। गुजरात के आदिवासियों की शिक्षा के लिए उन्होंने कई पाठशालाएँ स्थापित की और इस कार्य के सम्पादन में उन्हें काफी संघर्ष भी करना पड़ा। इसके अतिरिक्त उन्होंने शान्ति निकेतन प्राथमिक शाला तथा शान्ति निकेतन हाईस्कूल की भी स्थापना की।

जहाँ आपको साहित्यिक क्षेत्र में रचनाधर्मियों से भारी लगाव रहा, वही साम्प्रदायिक दंगों में पीड़ितों की सहायता करना, पाठशालाएँ एवं वाचनालय खोलने तथा उन्हें संचालित करने में ही आपका समय व्यतीत होता रहा हैं। संत विनोबा भावे के भूदान आंदोलन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, उत्तर प्रदेश के तथा बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में पद यात्राएँ करते समय सामन्तों, जमीनदारों, जागीदारों और के कड़े संघर्षों के कड्डवे अनुभवों के साथ अपनी जीवन यात्रा के संघर्षों को भी जारी रखा।

1973 में बेलपुर पहाड़िया स्नेहल उत्तर बुनियादी स्कूल में हिन्दी अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए और प्रधानाचार्य का पद भार ग्रहण कर लिया। 1982 से कड़जोदरा विद्यालय गुजरात में प्राचार्य के रूप में कुछ समय कार्य करने के पश्चात् स्वेच्छा से सेवा निवृत्ति लेकर अहमदाबाद आ गए। इस प्रकार डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी ने अपनी श्रमधर्मिता लगन और परिश्रम से जीवन के अनेक पड़ाव तो पार किए ही साथ ही साथ साहित्य साधना का कार्य भी जारी रखा।

अपनी इस यात्रा से शायद वह संतुष्ट नहीं थे अत: उन्होंने शान्ति निकेतन प्राथमिक शाला और शान्ति निकेतन हाईस्कूल की स्थापना की। इस बीच व्यथित

जी अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में छपते-छपाते रहे पर सेवा निवृत्ति के पश्चात् वह पूर्ण तन्मन्यता से समर्पित होकर साहित्य-साधनों में जुट गये इनके कार्य व अभिरूचियों को पूर्ण करने में इनके ज्येष्ठ पुत्र डॉ. कृष्णकुमार सिंह का विशेष योगदान रहा तथा छोटे पुत्र डॉ. विरेन्द्रसिंह से भी यथा सम्भव सहयोग मिला।

इस प्रकार एक साधरण मध्यम परिवार के बेटे ने अपने परिश्रम से साहित्य साधना की अनन्त उँचाइयों को छुआ उनका प्रयास आज भी जारी है जो अब प्रकाश पुंज बनकर साहित्य जगत में प्रविष्ट हो रहे नवोदित लेखतों को दिशा और सम्पूर्ण समाज को उजाला दे रहा है, किसी ने ठीक ही कहा है कि-

''जहाँ भी जाएगा वो रोशनी लुटाएगा।
किसी चिराग का अपना मकाँ नहीं होता।।''

'व्यथित'जी द्वारा सम्पादित 'रैन बसेरा' हिन्दी के छात्र-छात्राओं के अध्ययन पठन-पाठन में एक सहयोगी पुस्तक सिद्ध हो सकती है। हिन्दी साहित्यकारों और साहित्य के बारे में व्यथित जी द्वारा किया गया संकलन टिप्पणियाँ वास्तव दुलर्भ हैं। खासकर रचनाधर्मियों के लिए तो यह संग्रहणीय है ही।

डॉ. 'व्यथित'जी की प्रकाशित रचनाओं में 'दलितों का मसीहा'प्रबन्ध -काव्य के लिए गुजरात विधानसभा अध्यक्ष द्वारा 10 अप्रैल 1992 को उन्हें सम्मानित किया गया। उनका सम्मान 'युग-चिन्तन' कृति के लिए 1995 में गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा किया गया। खण्ड काव्य 'कैकेयी के राम' तथा 'हनुमान तीसिका' के लिए 'व्यथित'जी को 1994 में युग तुलसी पण्डित रामकिङ्कन्र जी ने सम्मानित किया। 'हनुमान तीसिका' पर तो मोहक गेय स्वरों में आडियो कैसेट तक प्रकाश में आ गया है।

डॉ 'व्यथित'जी की प्रतिभा का परिचय उनके विभिन्न शोध परक आलेखों से मिलता है। तेज रफ्तार से चलती हुई उनकी प्रतिभा विभिन्न मोड़ों पर संतुलन बनाती हुई निरन्तर गतिमान रहती है। उनकी दृष्टि समाज में उपेक्षित लोगों को हर

मोड़ पर ढूँढ लेती है। डॉ. आम्बेडकर अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन के राष्ट्रीय भीम मेला के अवसर पर उनके द्वारा प्रस्तुत शोध परक लेख **'दलित साहित्य, दशा एवं दिशा'** को खूब सराहा गया। हिन्दी की सेवा तो उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य बन गया था, इसीलिए उन्होंने हिन्दी की परीस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न अवसरों पर शोधपत्र प्रस्तुत किया है। भारतीय साहित्य में वर्णित महाकाव्य काल के अलौकिक पात्रों पर भी उन्होंने अपना दृष्टि निक्षेप किया है किन्तु डॉ. 'व्यथित'जी को समग्र रामायण महाकाव्य में महारानी कैकेयी की व्यथा ने सर्वाधित उद्वेलित कर दिया। उनकी यह परम्परा कालिदास की यक्षिणी, रामायण की सीता तथा मैथिली शरण गुप्त की यशोधरा एवं उर्मिला आदि की व्यथा की उपेक्षित अनुभूति के अनुसार ही प्रकाशित की गयी है।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी सामाजिक प्रतिभा के धनी है। उनका मानना है, कि समाज सेवा से ही मानव जीवन का पुरूषार्थ पूर्ण होता है। आचार्य पद पर रहकर उन्होंने विद्यालय परिसर में बँधी सेवा से उद्विगन होकर त्याग-पत्र दे दिया। फिर क्या था, अनेकानेका संस्थाओं में सहभागिता स्वीकार किया एवं नवीन संस्थाओं का निर्माण किया। मैनेजिंग ट्रस्टी-शान्ति निकेतन, हायर सेकेण्डरी स्कूल हिन्दी तथा गुजराती माध्यम एवं शान्ति-निकेतन शिक्षण संकुल, अहमदाबाद, गुजरात, कुलपति-गुजरात हिन्दी विद्यापीठ ओढ़व, अहमदाबाद, संचालक-शान्तिसदन, आदिजाति छात्रालय, अहमदाबाद, प्रबन्धक संस्कार भारती शिक्षण संस्थान, सुलतानपुर, उत्तर प्रेदश, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष- विश्व भोजपुरी सम्मेलन-सम्पादक रैन बसेरा पत्रिका एवं सहसम्पादक-नखत (अवधी-पत्रिका) इत्यादि 'व्यथित'जी की उत्कृष्ट सेवायें हैं।

डॉ 'व्यथित'जी साहित्यिक एवं सामाजिक सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न संस्थाओं द्वारा उन्हें अनेक मानद् उपाधियाँ निम्नलिखित हैं-

1. डॉ. आम्बेडकर राष्ट्रीय अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन द्वारा संत कवि

'रैदास कवि रत्न'।

2. साहित्यालोक प्रतापगढ़ (यू.पी.) द्वारा 'साहित्यश्री ।'

3. विक्रमशिला विद्यापीठ भागलपुर द्वारा 'विद्यावाचस्पति।'

4. अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा द्वारा 'राष्ट्रभाषा रत्न।'

5. क्रमाङ्क एक द्वारा भदन्त आनन्द कौशल्यायन पत्रकारिता रत्न।

6. अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन, भागलपुर (बिहार) द्वारा 'हिन्दी साहित्य मार्तण्ड।'

30 जून सन् 1957 को गुजरात की पावन धरती का आपने स्पर्श किया और कर्मभूमि बनाया। सर्वप्रथम अहमदाबाद नगर निगम में अध्यापन कार्य से सत्तर रुपया मासिक वेतन पर सत्संकल्प का श्री गणेश किया। डेढ़ वर्षोपरान्त पालड़ी के उन्नति विद्यालय में हाईस्कूल स्तर पर हिन्दी के शिक्षक हो गए। अल्पावधि में ही अपने सादा जीवन तथा उच्च विचारों के कारण गुजराती समाज में काफी लोकप्रिय हो गए। हिन्दी भाषियों में भी सर्वमान्य पहचान बन गयी। छात्रों में डॉ. 'व्यथित' जी की लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि बेमिसाल थी। अपने अध्यापन जीवन में कभी-कभी समय से पहुँचने के लिए आपको पाँच रुपये की जगह पचास रुपये भी मार्ग व्यय देने पड़े हैं।

छात्रों में ज्ञान विस्तार और उनकी रूचि के अनुसार अपने को समायोजित करके शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करना और राष्ट्रीयता का भाव जागृत आपका परमोद्देश्य था। आप मानते थे कि यह वर्तमान नई पीढ़ी ही भारत के भविष्य को बदल सकती है। अत एव वर्तमान का समृद्ध होना अति आवश्यक है। अध्ययन-अध्यापन आपकी दैनिक चर्चा के वृध्द अंग थे। वास्तविकता तो यह है कि 'व्यथित'जी के हृदय में जिस सामाजिक, साहित्यिक, परिकल्पना की लहरें हिलोरें

मार रही थी और जो भावनाओं के कगार टूट-टूट कर गिर रहे थे उनका कोई आर-पार नहीं था। लगता था अभी तो सब कुछ रिक्त ही रिक्त है। जीवन में कुछ अच्छा और सर्वोपरि करने की सद्वृत्ति अनन्त जीवन्त उत्कट अभिलाषा ही व्यक्ति को महान से महानतम बना देती है।

धैर्य और संयम के साथ आपने सात वर्षों तक उन्नति विद्यालय में शिक्षण सेवा को पुरी निष्ठा और ईमानदारी से किया। तदुपरान्त एक बार सात अध्यापकों ने इस विद्यालय से इस्तीफा देकर एक नया पंकज विद्यालय खोला। मलिन बस्ती के होनहार छात्रों को कमल की भाँति विकसित करने की अवधारणा इसके पीछे छिपी थी। डॉ. 'व्यथित' जी इसके आधार स्तम्भ थे। आज यहाँ प्राथमिक स्तर से लेकर बी.कॉम, बी.एड. तक का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। डॉ. 'व्यथित' जी का सक्रिय सहयोग और सर्वविधि त्याग पंकज विद्यालय के इतिहास में अविस्मरणीय है।

'व्यथित'जी ने धैर्य और आशा के साथ सभी विषम परिस्थितियों का सामना किया है। उन्होंने कभी भौतिक धन की तलाश नहीं की बल्कि अन्त:करण के धन की तलाश में जीवन अर्पित कर दिया। पराश्रय की जगह आत्माश्रय ही आपका विचार रहा। अपनी मौलिकता के कारण ही आपने अपनी जीवन नौका को अथाह प्रवाह में भी बहाकर घबराना नहीं सीखा। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अहमदाबाद के दहगाम तहसील के बेलपुरा (पहाड़िया) में अवस्थित 'स्नेहल उत्तर बुनियादी विद्यालय' हैं । प्रेम और करुणा के अवतार को विद्यालय के नामकरण पूर्व में 'स्नेहल' ही अधिक रास आया। इन्हें पता था कि यहाँ के कुरूप मन को सन्नेह ही जीत सकता है। 'व्यथित'जी की जिजीविषा अभी बहुत कुछ करने को व्यग्र थी।

अत: आपने शिक्षा के विकास और विस्तार के लिए ऐसा क्षेत्र चुना जो प्रत्येक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा, दबा, कुचला था। मेश्वो नदी की बाहों में तीन तरफ में घिरी निर्जन टेकरी पर इस कर्मयोगी ने अपना पाँव रखा। नदी का तटीय प्रदेश जिसे दरेरते हुए मेश्वो बहती है। ऊँची-नीची जमीन, खड्ड, अनन्त झाड़-झंखाड़,

करील के काँटेदार सघन कुंज्ञ, जहाँ वहाँ के स्थायी निवासी को भी दिन के उजाले में जाने के नाम पर जूड़ी आती थी। बरसात में तो मेश्वो नदी प्रलय ढाने लगती है। चारों, बदमाशों का अड्डा अनेक जानलेवा भयावह जीव जन्तुओं की वह टेकरी पनाहगाह थी। क्षेत्रीय बस्ती बेहद गरीब और अशिक्षित, विद्यालय विहीन। शिक्षा के नाम पर वहाँ के निवासियों की नाकों पर मक्खियाँ बैठने लगती थी। देशी शराब एवं 'कावा' पीने की लत ने हर एक को बरबाद कर रखा था। चोरी, हत्या, लूटपाट उनके दैनिक चर्या में शामिल थे। सड़े-गले चोटे में किश्वत चाय एवं मादक द्रव्य डालकर खौलाकर पीना उनका शौक था।

दहगाम के सेठ साहूकारों के यहाँ उनके कार्ड, जेवर-गण्ठे, खेतीबारी सब गिरवी थे। जीवन की आवश्यकता में अकर्मण्यता के अभाव में उनके लिए चुनौती थीं और सेठ साहूकारों के दरवाजों एवं उनके शोषक पंजो का क्षेत्र पूरी तरह शिकार था। फिर तो गिरवी चीजों को साहूकारों के चूँगल से छुड़ा पाना किसी के लिए हथेली पर दुब जमाने जैसा था। वहाँ के निवासियों की इस दुर्दशा से 'व्यथित'जी की अन्तरात्मा तड़प उठी। इनका अडिग निश्चय हुँकार उठा और इस क्षेत्र को सुर्खरू करने का आप ने बीड़ा उठाया। दहगाम के प्रतिभा सम्पन्न सर्वोदयी मीनूभाई का आपको प्रबल समर्थन एवं आर्थिक सहयोग मिला। कड़जोदड़ा गाँव में गाभासिंह ठाकुर ने अनुनय विनय के पश्चात् दानवीर भूमिका निभाई। 4 एकड़ 19 गड्डा जमीन दान कर गाभासिंह ठाकुर ने अपना नाम अमर कर लिया। कड़जोदड़ा गाँव तालुका दहगाम के अन्तर्गत था। अतः 'कड़जोदड़ा विद्यालय' के नाम से विद्यालय की शुरूआत हुई।

डॉ. 'व्यथित'जी 'स्न्नेहल विद्यालय' में जब शिक्षण रत थे उसी समय गुजरात सर्वोदय मण्डल से सम्बन्धित पैंतीस कार्य कर्ताओं का एक जत्था विनोबा जी के निर्देश पर 6 महीने के लिए बिहार रवाना हुआ। डॉ. 'व्यथित' जी ने विद्यालय से छ: माह का अवकाश ले लिया। उस समय बिहार की स्थिति अत्यन्त खतरनाक

थी। नक्सल आन्दोलनकारियों का जल जला था। जन-जन में घोर आतंक व्याप्त था। हिंसा की आग में बिहार जल रहा था। नक्सली जयप्रकाश जी की जान से खेलने को आतुर थे। डॉ. द्वारका दास जोशी के नेतृत्व में डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी कान्ता बहन शाह, हरिविलास बहन शाह, निर्मला बहन शेठ, अमूलकभाई खिमाड़ी, जेठाभाई श्रीमाली आदि भूदान यज्ञ को सर अंजाम देने सर पर कफन बाँधकर निकल पड़े। किसी को भरोसा नहीं था कि ये कार्यकर्ता बिहार से जीवित बचकर अपने घर आ सकेंगे।

बिहार में पहुँचकर दो-दो सदस्यों की टुकडियाँ बनायी गयीं। कार्यक्षेत्र भी बाँट दिये गए। जयप्रकाश जी के नेतृत्व में करूणा प्रचार के लिए सहरसा में तीन, दिवसीय एक सेमिनार आयोजित हुआ। सेमिनार पूरी तरह सफल रहा। सहरसा जिला कोसी नदी की बाँहों में खेलता है। कोसी नदी भारत की 'ह्वाँगहो' नदी कही जाती है। इसकी बाढ़ की त्रासदी पता नही कब से यहाँ के लोग झेलते आ रहे हैं। अहमदाबाद के कार्यकर्ताओं को सहरसा जिले के तत्कालीन दो ब्लाक सिद्धेश्वर और मधेपुरा कार्य करने के लिए सौंपे गए। व्यथित जी तथा जेठाभाई श्रीमाली को मधेपुरा के दश गावों में कार्य करने का निर्देश हुआ।

सन् 1968 में अहमदाबाद में घोर जघन्य अपराध हुआ कत्ल-ए-आम। सितम्बर माह में अब्दुल गफ्कार खान (सीमान्त गाँधी) अहमदाबाद आए थे। उन दिनों डॉ. 'व्यथित' जी मुस्लिम बहुल राजपुर टोलनाका में भोगीलाल की चाल कमरा नं.61 में रहते थे। इसी समय संसदीय क्षेत्र जमालपुर मुस्लिम बहुल आबादी वाले क्षेत्र में जगन्नाथ जी के विशाल, बहुचर्चित मंदिर में एक अजीबो-गरीब घटना घटी। बहशियाना हरकतें हुई। मंदिर की गोशाला में हजारों की संख्या में गायें तथा सैकड़ों की संख्या में हाथियों का विशाल समूह परिपालित था। गायों पर कुछ हत्यारों ने एसिड डाल दिया अनेक मूक, निरीह गायों में जलकर तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया।

हिन्दुओं के लिए गाय माता के समान है। इस घटना को लेकर जो जुनून उभरा वह नरसंहार के रूप में अत्यन्त उग्र एंव भयावह त्रासदी लेकर। धार्मिक उन्माद में भयंकर जातीय हिंसा की आग धू-धूकर जलने लगी। देखते ही देखते आदमियों को काटकर बिछा दिया गया। असंख्य हिन्दू-मुसलमान इस हिंसा के शिकार हुए। साधुओं को भी मौत के घाट उतारा गया। यह आग अनेक संवेदनशील इलाकों को भस्म करने पर तुल गयी। अहमदाबाद उस आग की चपेट में तहस-नहस था। एड़ी भर लहू जम गया। आग के ढेर में लोग लाशें ढूँढ रहे थे। सारा शासकीय तन्त्र मूक, बधिर की भाँति हतप्रभ था। 'व्यथित'जी जहाँ रहते थे, कुछ हिन्दी भाषियों के प्राण अवशेष थे। अफवाह गर्म थी कि 'व्यथित'जी भी मौत के घाट उतर गये। यह अनहोनी तो जान बूझकर पैदा की गयी थी।

उन्माद ने संयम और धैर्य तोड़ दिया था। मानवता-दानवता के रूप में नृत्य कर रही थी। संस्कृति पछाड़ें खाकर रो रही थी। जिस समय प्राण बचाने के लाले पड़े थे उस समय भीषण नरसंहार में 'व्यथित' जी सर पर पीला साफा बाँधकर सेवा-सैनिक के रूप में भूखे-प्यासे रहकर तीन दिन-रात शान्ति का सन्देश बाँटते रहे। मीनूभाई तथा अनेक स्वयंसेवी, सर्वोदयी कार्यकर्ता जान हथेली पर लेकर समूह में आग को बुझाने के लिए आकुल, व्याकुल, तड़पते-दौड़ते रहे। लोगों को शान्त करते रहे। यद्यपि उस समय 'व्यथित'जी का स्वास्थ्य इसकी इजाजत नहीं दे रहा था तथापि उनकी आत्मा में पता नहीं कहाँ से कितनी शक्ति आ गयी थी ? घायलों की सेवा करने, लाशों को हटाने, शान्ति का सन्देश देने का तपोपूत क्रम स्वयं को जोखिम में डालकर चलता रहा। 15 दिनों तक इन स्वयं सेवकों का कैम्प चला। तत्पश्चाद यह भीषण आग समाप्त हुई। अनेक धर्मों वाले प्रभुता सम्पन्न इस गुलशन के अमन-चैन पर यह भीषण वज्रपात एव सवालिया निशान था और कभी साफ न होने वाला काला धब्बा था।

डॉ. 'व्यथित'जी एक सजग पत्रकार के रूप में :

डॉ. 'व्यथित'जी बहुभाषाविद् हैं। संस्कृति की चासनी में बोली जाने वाली गुजराती में ना उन्होंने 'दलितों ना मसीहा' प्रबन्ध-काव्य तथा 'बालकृष्ण' संज्ञायित खण्ड-काव्य का प्रणयन भी किया फिर भी अनेक कारणों से उन्हें हिन्दी भाषा से विशेष आत्मीयता रही है। प्रथम यह कि यह उनकी मातृभाषा है, दूसरे यह कि गाँधीजी की मान्यताओं के प्रबल हिमायती हैं। गुजरात में नाम मात्र का हिन्दी प्रचार-प्रसार देखकर इनमें उसके उन्नयन की इच्छा जागी। सीमित संसाधनों एवं जन-सहयोग के बलबूते इन्होंने हिन्दी प्रचार-प्रसार हेतु विविध संस्थाओं की स्थापना की जिससे कि गुजरात सहित अन्यान्य अहिन्दी प्रदेशों में भी हिन्दी प्रचार किया जा सके, हिन्दी में नवलेखकों की खेप सतत रूप से तैयार होती रहे जबकि पौढ़ रचनाधर्मियों को उनकी हिन्दी सेवा की उत्कृष्टता के आधार पर सम्मानित किया जा सके।

उन्होंने 'रैन बसेरा' नाम की हिन्दी की एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया। इस सामयिकी में लेखन की लगभग समस्त विधाओं की रचनाओं को समुचित स्थान मिलता है, जन-सामान्य की जिन्दगी से जुड़े रचनाकारों को पत्रिका में स्थान मिलता है चाहे वह देश के किसी भी अंचल से सम्बन्धित क्यों न हों। चूँकी साहित्य और पत्रकारिता दोनों ही लोक परिस्कारकारी एवं लोकहितबद्ध होते हैं, कोई भी लेखक एक ही प्रयास में साहित्यकार भी होता है और पत्रकार भी।

अभी तक के इतिहास में किसी व्यक्ति द्वारा ग्रामीण साहित्यकारों की ओर ध्नान नहीं दिया गया है। डॉ. व्यथित द्वारा 'रैन बसेरा' के माध्यम से इस ओर लेखकों का ध्यान आकर्षित किया गया। **''ग्रामीण साहित्यकारों की दशा और दिशा''** विषय देखकर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल और सार्थक आयोजन किया। 'रैन बसेरा' में देश के प्रबुद्ध लेखकों के विचारों का प्रकाशन किया गया। डॉ. 'व्यथित' जी ने स्वयं जुलाई 1997 के अंक में इस विषय पर अपने विचार भी

व्यक्त किये हैं और ऐसे महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं जो विचारणीय हैं। वास्तव में यदि इन सुझावों को क्रियान्वित किया जावे तो ग्रामीण साहित्यकारों द्वारा सृजित साहित्य प्रकाश में आ सकता है और निश्चित ही इससे हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की श्रीवृद्धि होगी। ऐसे बहुत से कारण डॉ. 'व्यथित'जी ने अपने लेख में व्यक्त किए हैं जिस कारण ग्रामीण साहित्यकार और उसका साहित्य परिस्थितियों की भीषण मार से टूटकर छिन्न-भिन्न हो जाता है। देश और समाज अपने श्रेष्ठ साहित्य और साहित्यकारों की अमृतवाणी से सर्वदा वंचित रह जाता है। डॉ. 'व्यथित'जी जैसा सजग साहित्यकार ही सभी बुद्धिजीवियों, लेखकों और विचारकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट कर सकता है। आज के अनेक शहरी साहित्यकारों के मस्तिष्क में ऐसा विचार भी कभी न आया होगा। वे तो अपनी सुख सुविधा और प्रतिष्ठा के लिए हाथ पैर मारते रहते हैं। है न यह एक अनूठे आर्दश का प्रमाण।

पर्यावरणविद् एवम् अर्थशास्त्री ही पर्यावरण एवं जनसंख्या वृद्धि से चिन्तित हो ऐसी बात नहीं, एक सजग साहित्यकार होने के नाते डॉ. 'व्यथित'जी जैसा व्यक्ति भी चिन्तित होता है। यह समस्या आज किसी एक देश की समस्या न होकर सम्पूर्ण विश्व की समस्या बन गई है। जन संख्या वृद्धि होने से व्यक्तियों की भोगवादी प्रवृति बढ़ी है और अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उचितानुचित का ध्यान न देकर प्रवृति का अंधा शोषण किया है। एक वैज्ञानिक जैसा दृष्टिकोण अभिव्यक्त करते हुए डॉ. 'व्यथित'जी जनवरी 98 के सम्पादकीय में लिखते हैं-

''पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण का प्रश्न अब किसी देश विशेष की समस्या नहीं बल्कि समस्त विश्व के अस्तित्व का प्रश्न बन गया है। आकाश में ओज़ोन पर्त नष्ट हो रही है। भौगोलिक परिवर्तन के साथ ही साथ वातावरण में भी भयंकर परिवर्तन आ रहा है जो मानव जीवन एवं प्राणी सृष्टि के लिए खतरे की घंटी बजा रहा है। जन संख्या वृद्धि और बढ़ते औद्योगीकरण के विषम चक्र से जब तक छूटने

का कोई ठोस व कठोर कदम नहीं उठाया जाएगा, तब तक विश्व के माथे पर विनाश के जो काल विकराल बादल मँड़रा रहे हैं वे खत्म नहीं होंगे।''

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी का उनका जन्म राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा के लिए हुआ। कृत्रिमता से दूर हिन्दी की सच्ची, समर्पित, उत्कृष्ठ सेवा के प्रति उनकी भावना राजभाषा प्रेमियों तथा अनुरागियों के लिए अनुकरणीय तथा महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने गुजरात हिन्दी विद्यापीठ, अहमदाबाद में 18 अगस्त 1988 में ओढ़व में स्थापित किया। इस हिन्दी सेवी संस्था के व्यथितजी ने जो उद्देश्य निर्मित किये उनमें प्रमुख हैं।

(1) अहिन्दी भाषी राज्यान्तर्गत हिन्दी भाषा का व्यापक प्रचार-प्रसार,

(2) विभिन्न हिन्दी परीक्षाओं (हिन्दी प्रवेश, हिन्दी प्रारम्भिक, हिन्दी प्राथमिक, हिन्दी दीप, हिन्दी ज्योति, हिन्दी प्रकाश) के माध्यम से व्यक्तियों में हिन्दी के प्रति अभिरूचि उत्पन्न तथा जाग्रत करना। उनकी उदार दृष्टि में हिन्दी पूज्य महात्मा गाँधी, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महर्षि अरविंद, राजाजी, मोरारजी देसाई, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, देशरत्न-चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजर्षि टंडन, मदनमोहन मालवीय आदि अमर आत्माओं का स्वर हिन्दी है। इसलिए राष्ट्रीय स्मिता तथा एकता की प्रतिक हिन्दी को घर, बाहर, शासन, दैनिक जीवन व्यवहार, बोलचाल में सीना तानकर गर्व के साथ हिन्दी को अपनाएँ उसका उपयोग करें, महा मानवों की आत्मा की पुकार पर पर्याप्त ध्यान व सम्मान कर इसकी समृद्धि और उत्कर्ष का संकल्प करें।

(3) हिन्दी में उच्चकोटि का साहित्य-सृजन, सामर्थ्य और क्षमता का विस्तार।

(4) भारतीय जनों, विदेशियों और विदेशी भारतीय प्रवासियों के लिए विभिन्न स्तरीय हिन्दी भाषा के पाठय-क्रमों का निःस्वार्थ संचालन।

(5) प्रयोजन-मूलक हिन्दी पाठ्यक्रमों का संचालन।

(6) हिन्दी अध्यापकों का समुचित प्रशिक्षण, मार्गदर्शन।

(7) शैक्षणिक साधनों तथा दृश्य-श्रव्य साधनो का निर्माण।

(8) उत्तम ज्ञान, विज्ञान, कला और सामाजिक, विषयक साहित्य का निर्माण, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान करनेवाले व्यक्तियों को सार्वजनिक, संस्थानिक सम्मान।

व्यथित जी ने उपरोक्त उद्देश्यों की संपूर्ति में नम्र संकल्प एवं जनीय प्रवृत्तियों के विकास पर बल दिया जो निम्नवत हैं।

(1) हिन्दी प्रचार एवं उपाधि परीक्षाओं का संचालन।

(2) विद्यापीठ में प्रेस का संचालन।

(3) विद्यापीठीय परीक्षार्थ पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन।

(4) परीक्षोपयोगी कृतियाँ की बिक्री।

(5) अखिल भारतीय तथा प्रान्तीय शिबिरों का आयोजन।

(6) निबन्ध एवं एकांकी प्रतियोगिताओं का क्रियान्वयन।

(7) नाट्य एवं कालात्मक रंगमंचीय विविध सेमिनार तथा आयोजन।

(8) पुस्तकालय एवं छात्रालय का स्थापन।

(9) पत्रिका संचानल तथा साहित्यिक स्मारकीय प्रवृतियाँ।

डॉ. 'व्यथित'जी ने वर्ष 1993 से 'रैन बसेरा' (साहित्य-कला-संस्कृति प्रधान मासिक पत्रिका) विद्यापीठ का मुखपत्र अपने संपादन में प्रकाशित किया। इसके माध्यम से हिन्दी का राष्ट्रव्यापी प्रचार-प्रसार विशेषकर अहिन्दी क्षेत्रों में ही नहीं हुआ वरन् असंख्य नयी उदीयमान लेखकीय प्रतिभाओं को विकसित, स्थापित और पुष्पित और पल्लवित करने के सार्थक अवसर मिले। सारे भारत तथा

विश्वव्यापी हिन्दी क्षेत्र के अनेक लेखकों, कवियों, रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन और पाठक वर्ग से लेखकीय तादात्म्य जोड़ने में इसके योगदान को विस्मरणीय नहीं किया जा सकता।

'रैन बसेरा' के परामर्श मंडल में पाण्डेय आशुतोष (संयोजक) (चंपारण-बिहार), डॉ. रामचरण महेन्द्र (कोटा, राजस्थान), वी.एम.दास अग्रवाल (दिल्ली), रूकमाजी (चेन्नई, तमिलनाडु), डॉ. वी.वी. विश्वम (केरल), कृष्णराव (मुबंई-महाराष्ट्र), डॉ. रजिन्दर रोर्जा (रोपड़ा-पंजाब), मदन हिमाचली (हिमाचल प्रदेश), दिनेश यादव (तिलंजला-पं. बंगाल), डॉ. रामबहादुर मिश्र (हैदरगढ- बाराबंकी, उ.प्र.) दोलत परिहार (जम्मू-तवी, काश्मीर), डॉ. स्वर्णकिरण (सोहसराय-बिहार), डॉ. वेद प्रकाश पांडेय (उ.प्र.) नरेन्द्र मिश्र धड़कन (सरगुजा-म.प्र.), जवाहरसिंह (इम्फाल-मणिपुर), डॉ. राजकिशोर पांडेय (हैदराबाद-आंधप्रदेश) डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र (कलकता-बंगाल), धीरेन्द्र गहलोत धीर (डबरा-म.प्र.), योगेशचन्द्र दुबे (चिंत्रकूट-मं.प्र.) चंद्रपाल सिंह क्षत्रिय (अहमदाबाद), मथुरा प्रसाद सिंह 'जटायु' आदि को व्यथित जी ने जोड़कर राष्ट्रीय एवं भाषायी एकता में पर्याप्त संवृद्धि की है।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'की हिन्दी सेवा अतुल्य है। वह गुजरात हिन्दी विद्यापीठ अहमदाबाद के कुलपति तथा प्रबल गाँधीवादी विचारक तथा चिंतक हैं। हिन्दी सेवा के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ने उन्हें 1996 में **'अनुशंसा पुरस्कार'** तथा शिव संकल्प साहित्य परिषद नर्मदापुरम (म.प्र.) द्वारा **'साहित्य-श्री'**, सम्मान से सम्मानित किया है। नि:स्वार्थ और समर्पित हिन्दी सेवी व्यथित जी का व्यक्तित्व विशाल और सेवाएँ महनीय हैं अत: सम्मान और पुरस्कार निर्मूल है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में डॉ. व्यथित जी का अद्भूत एवं विलक्षण रूप देखने को मिलता है कि इन्होंने अपने 'रैन बसेरा' मासिक के सम्पादकीय में अपने साहस तथा निर्भीक्ता का उद्घाटन किया है। इन्हीं सब अवदानों के कारण इन्हें 15

अगस्त 1995 को साहित्य अकादमी उज्जैन (मध्य प्रदेश) की ओर से **'पत्रकारिता रत्न'** से सम्मानित किया गया है।

'व्यथित'जी के साहित्य के निस्संग मूल्यांकन की आवश्यकता है। एक-एक विधा पर साहित्य शास्त्र तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से शोध-कार्यों की आवश्यकता है। परम्परा और आधुनिकता को केन्द्र में रखकर पद्य साहित्य का मूल्यांकन अपेक्षित हैं। विभिन्न विधाओं के विकास क्रम में विधा विशेष का अनुशीलन अनिवार्य है। साहित्य के एक-एक रचना तत्व को आधार बनाकर विधा विशेष का मूल्यांकन होना चाहिए। संरचना के आधार पर सभी रचनाओं का एकल, शोध कार्य की दृष्टि से मूल्यांकन होना चाहिए। अन्तर्विधायी शोध के लिए बहुत सम्भावनाएँ हैं। 'दलितों का मसीहा' प्रबन्ध काव्य का समाजशास्त्री अनुशीलन, रामायण-कालीन खण्ड-काव्यों का मनोवैज्ञानिक मूल्याकंन, महाभारत-कालीन खण्ड-काव्यों का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन, महाभारत-कालीन खण्ड- काव्यों में समाज और राजनीतिक गद्य साहित्य का सांस्कृतिक अनुशीलन, काव्य संग्रहों का लोकतात्विक परिशीलन, पद्य साहित्य तथा गद्य साहित्य का रचनाशिल्प आदि अनेक शोध विष अनुसंधानेय हैं।

वर्तमान भाषा वैज्ञानिक शोधयुग में समाज-भाषा विज्ञान अभिनव पक्ष है। इसके अनेक शोध आयाम हैं। डॉ. 'व्यथित'जी अनेक भाषाओं के कवि हैं। भाषा परम्परा, इतिहास बोध तथा भाषायी संस्कृति के उन्नायक है। वस्तुत: 'व्यथित' जी सामाजकि अस्मिता के रचनाकार है। बहु भाषिता के संदर्भ में डॉ. 'व्यथित' जी के साहित्य का विवेचन 'भाषा नियोजन और व्यथित जी के साहित्य','भाषा मानकीकरण' और 'व्यथित जी का साहित्य,''भाषा अनुरक्षण और भाषा विस्थापन के संदर्भ में व्यथित जी के साहित्य का अनुशीलन' डॉ. 'व्यथित' जी के साहित्य का समाज भाषा वैज्ञानिक विवेचन व्यथित जी के पद्य साहित्य की भाषा का लोक सांस्कृतिक अनुशीलन, व्यथित जी के गद्य साहित्य की भाषा का सांस्कृतिक

मूल्यांकन, व्यथित जी के साहित्य का समाजशास्त्री अनुशीलता आदि अनेक स्वतंत्र शोध विषय है।

भारतीय समाज में त्राहि-त्राहि मचानेवाले दहेज दानव के संदर्भ में डॉ. जयसिंह 'व्यथित' के विचारों को लें। सर्वविदित है कि विभिन्न स्तरीय सरकारी गैर सरकारी संगठनों द्वारा दहेज कु-प्रथा के विरुद्ध विविध अभियानों के बावजूद अपेक्षित रोक नहीं लग पा रही है। दहेज के विरुद्ध कठोर कानून बनने से भी इस पर प्रभावी नियंत्रण नहीं हो पा रहा है। चाहकर भी इस दहेज दानव के विरुद्ध सफल व्यूहरचना नहीं हो पा रही है। वस्तुत: इसके मूल में छिपे कारणों की अनदेखी करने से ही यह समस्या बन रह गयी हैं। सुधी सम्पादक डॉ. 'व्यथित' इस सम्बन्ध में स्पष्ट टिप्पणी (रैन बसेरा,-मार्च 1997) करते हैं जिससे किसी भी विवेकशील भारतीय नागरिक का असमहत होना शायद ही सम्भव हो-

'....जबतक देश में चारित्रिक एवं नैतिक शिक्षा पर जोर नहीं दिया जाएगा, तबतक दहेज का यह भीषण कैंसर लाइलाज ही रहेगा। अतएव देश के सत्ताधीशों को चाहिए कि वे नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाकर राष्ट्र के चरित्र बल को ऊँचा उठावें। सिर्फ दहेज विरोधी कानून बना देने से कुछ नहीं होगा। जिस दिन माँ-बहनों के दिल-दिमाग में यह बात घर कर जाएगी कि दहेज लेना और देना दोनों ही पाप है, अनैतिक है, उसी दिन दहेज प्रथा अपने आप बन्द हो जाएगी।'

दुर्भाग्यवश भारतीय पत्रकारिता का एक बड़ा वर्ग स्वार्थवश अपने इस राष्ट्रीय दायित्वों के निर्वाह में अपेक्षित रूचि नहीं ले रहा है। ऐसी स्थिति में डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी जैसे राष्ट्रवादी चिंतकों-सम्पादकों की संख्या अत्यल्य होने के बावजूद उन लोगों की भूमिका अत्यन्त श्लाध्य और महत्वपूर्ण बन गई है। इस संदर्भ में डॉ. व्यथित की चिन्ता विशेष ध्यातव्य है-

'.......राष्ट्र निर्माण और **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की कैसी उदा् हमारी परम्परा थी किन्तु संस्कारों और नैतिक मूल्यों के स्थान पर असंस्कारों तथा अनौतिक जीवन

मूल्यों की क्षितिज का विस्तार होता जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप हमारी सभ्यता संस्कृति की भव्य इमारत जर्जर होकर ध्वस्त होती जा रही है। हम पाश्चात् सभ्यता-संस्कृति के मृगजल की तलाश में बेतहाशा भाग रहे हैं और पश्चिमवाले अपनी आत्मिक सुख-शांति के लिए हमारी सभ्यता-संस्कृति की भव्य विरासत की खाक छान रहे हैं.....'(रैन बसेरा, जुलाई 1996)

पश्चिमी भौतिकवादी जीवन शैली के दुष्प्रभावों से पारम्परिक भारतीय संयुक्त परिवारों के सतत विघटन एवं दूरगामी कुपरिणामों पर विचार करते हुए भी डॉ. 'व्यथित' जी बेलागलपेट के स्वीकारते हैं-

'.......... पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति की एकाकी जीवन शैली के तूफानी थपेड़े हमारी सभ्यता-संस्कृति की जड़ों को बुरी तरह हिला दिए हैं। ऐसी हालत में विश्वबंधुत्व और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना कैसे साकार होगी ? अतएव भारतीय सभ्यता-संस्कृति के सन्दर्भ में हमें नये सिरे से संयुक्त कुटुम्ब के महत्व और उनकी अनिवार्यता को स्वीकार करना ही होगा?'('रैन बसेरा' अक्टूबर 1995)

भारतीय सभ्यता संस्कृति के प्रबल पक्षधर डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी के सन्दर्भ में यह तथ्य भी विशेष ध्यातव्य है कि वे अग्रपांक्तेय चिंतकों-सम्पादकों में से अधिसंख्य निराशावादियों के विपरीत पूर्णत: आशावादी हैं। **''कुछ बात है जो हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा''** पर अटूट विश्वास रखने के कारण ही वे भारतीय शभ्यता-संस्कृति पर लगातार होते वर्तमान हमलों से चिन्तित होने के बावजूद कतई हताश और निराश नहीं परिलक्षित होते हैं। वे सतत् सचेष्ट रहकर प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में परिवर्तित करने के लिए भारतीयों को अपनी सभ्यता संस्कृति के प्रति अटूट आस्था संजोये रखने की प्रेरणा देना अपना कर्तव्य मानते हैं। वे इसके लिए भारत के सभी सुभेच्छु बुद्धिजीवियों को कर्तव्यबोध भी करते हैं-

'......... अखिल विश्व के मानचित्र पर भारतीय कला संस्कृति, विकास, एकता

और अखण्जता को अंकित करना है, तो जन-जन की आस्था डिगे नहीं, विश्वास खण्डित न हो, इस पर पूरा-पूरा ध्यान केन्द्रित करना होगा। तभी हम आस्था के डिगते कदमों को स्थायित्व दे पायेंगे। आम जनमानस में व्याप्त नैराश्य को विश्वास का मजबूत अटूट सम्बल दे अपना तथा राष्ट्र का विकास करने में सफल हो पायेंगें। ('रैन बसेरा'जनवरी 1996)

एक समय भारतीय लोकतंत्र के पावन यज्ञरूपी चुनावों को निहित स्वार्थवश राजनीति में प्रवेश किये अपराधी तत्वों के विविध उत्पातों से बचाने की दिशा में कुछ अपेक्षित कठोर कदम उठाने वाले बहुचर्चित टी.एन. शेषन की मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में नियुक्ति को डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी ने एक प्राय: युगान्तकारी घटना के रूपमें स्वीकार किया था। सर्वविदित है कि भारतीय लोकतंत्र को क्षत-विक्षत करने वाले निहित स्वार्थी, भ्रष्ट एवं अवसरवादी राज नेताओं की निरंकुशताओं को पूर्व मुख्य आयुक्त शेषन ने प्रभावी अकुंश देकर आम नागरिकों की लोकतंत्र में डिगती आस्था को पुनर्प्रतिष्ठित करने में अपनी महती भूमिका का यथाशक्ति निर्वाह किया था।

यह दीग़र बात है कि शेषन को चुनाव सुधारों में पूर्ण सफलता के स्थान पर आंशिक सफलता ही प्राप्त हुई क्योंकि भ्रष्ट व्यवस्था के लाभुकों ने उनके मार्ग में अनेक बाधाएँ उपस्थित कीं। साथ ही, जिम्मेदार बुद्धिजीवियों में से अधिकांश ने सुधार अभियान में अपेक्षित सहयोगात्मक रुख भी नहीं अपनाया क्योंकि उन्हें सुधार हो पाने का कतई विश्वास नहीं था। वैसे निराश-हताश एवं यथास्थितिवादी बुद्धिजीवियों को भी डॉ. जयसिंह 'व्यथित'ने बौद्धिक जड़ता त्यागकर लोकतंत्र को स्वास्थ्य लाभ कराने में सहयोग के लिए समय रहते ललकारा था-

'एक तरह से भय-भ्रष्टाचार के इस राष्ट्रीय कैंसर के लिए यह (शेषन की नियुक्ति) 'इलेक्ट्रीकशॉक' का काम हुआ। हवा अनुकूल है। जरूरत है सिर्फ पहल करने की। यही हमारे अपने लोकतंत्र की स्वस्थता के शुभ संकेत हैं। हमें भी

आपने लोकतंत्र की स्वस्थता हेतु आशान्वित हो इंकलाबी झंडा उठाने के लिए कटिबद्ध होकर आगे आना होगा।' ('रैन बसेरा' अगस्त 1996)

डॉ. 'व्यथित'जी एक व्यापक प्रचार-प्रसार वाली पत्रिका के सम्पादक होने का कोई भी अनुचित आर्थिक लाभ उन्हें काम्य नहीं रहा है। उनकी निष्ठा और प्रतिबद्धता सदैव पाठकों के हित में रहे, वे सदैव ध्यान इस पर केन्द्रित रखते हैं। इसलिए ऊल-जलूल विज्ञापनों की भरमार वाले अखबारों की कटु भर्त्सना करने का नैतिक साहस उनके प्रखर व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण आकर्षण रहा है। डॉ. 'व्यथित'जी सम्पादक होने के बावजूद प्रकाशन के क्षेत्र में घातक घुसपैठ करती वैसी व्यावसायिक स्वार्थपूर्ति की भर्त्सना डॉ. 'व्यथित' जैसे विरले कर्तव्यनिष्ठ, स्वाभिमानी एवं उच्चचरित्रवान सम्पादक ही कर सकते हैं। अपने पाठकों की हित रक्षा के प्रति डॉ. व्यथित की यह सजगता निश्चय ही श्लाध्य और स्तुत्य है-

'.....समाचार पत्र के नाम पर अखबार वाले अपनी व्यावसायिक स्वार्थपूर्ति हेतु उसमें इतना सारा निकम्मा कचरा और विज्ञापन भर देते हैं कि पाठक उन्ही में उलझकर रह जाता है। .... यह एक प्रकार के जुल्म और जुर्म के साथ-साथ स्वतंत्र भारत की पत्रकारिता के लिए शर्म तथा शोषण का विषय है। पाठक अखबार पढ़ने के लिए पैसा देता है, न कि ऊल-जलूल विज्ञापनों के लिए।' ('रैन बसेरा' नवम्बर 1995)

डॉ. 'व्यथित'जी के वैचारिक वैशिष्ट्य को देखने-परखने के साथ-साथ उनकी प्रतिबद्धता भी आईने की तरह एकदम साफ सुथरी है। आश्चर्य होता है कि प्रयत्न लाघव की दुष्प्रवृत्ति की सर्वत्र व्याप्ति के बाद भी डॉ. 'व्यथित'जी ने कर्म को ही जीवन का श्रृंगार मानकर आज तक उसकी अविरल साधना की है। इनके लिए कर्म ही जीवन का सार है, पूजा-उपासना है और सर्वतोभावेन ग्राह्य साधना भी। वस्तुत: एक कर्मयोगी की भाँति ही इन्होंने अपनी शक्ति और क्षमता को निरन्तर कर्मभिमुखता प्रदान की है। अनावश्यक अवकाश भोग इन्हें रंचामात्र भी रास नहीं

है। पर्व-त्यौहारों के अवसर पर भी वे सार्वजनिक अवकाश के पक्षधर नहीं। कर्म के प्रति यही अविरल निष्ठा डॉ. 'व्यथित'जी को आधुनिक मनीषी के रूप में प्रतिष्ठित कराती है। **'कम काम और अधिक दाम'** की प्रचलित विद्यातिनी संस्कृति का मुखर विरोध करना निश्चय ही इनके कर्मयोग समन्वित प्रेरक व्यक्तित्व का सुस्पष्ट परिचय है-

'हम अपनी और अपने देश की गरीबी का रोना रोते हैं किन्तु महेनत-मजदूरी और पुरुषार्थ से जिनका इस दुनिया में कोई विकल्प नहीं है, मुँह चुराते हैं। हम हंमेशा इस ताक में रहते हैं कि कब कोई उत्सव या त्यौहार आये और हमें छुट्टी मिल जाए। अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार सबको पर्व-त्यौहार मनाने का अधिकार है किन्तु अपने-अपने सीमित दायरे में ही। उसे सारे देश के माथे पर थोपने का हमें कोई भी अधिकार नहीं और न तो उसके लिए किसी प्रकार के राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा की ही जरुरत है। अवकाश के नाम पर एक दिन का साप्ताहिक अवकाश ही काफी है। कम काम और अधिक दाम की विधातक संस्कृति का विनाश जरूरी है, तभी देश अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। ('रैन बसेरा', जून-1997)

ऐसे में भला कहाँ सम्भव है कि क्रिकेट खेल से बढ़ते निठल्लेपन पर कर्मयोगी डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी को आक्रोश नहीं होता ? सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र के प्रति अपने-अपने दायित्वों-कर्तव्यों को भूलकर क्रिकेट देखने-सुननेवाले करोड़ों कामकाजी नागरिकों का इस तरह निकम्मा बनना भला कैसे किसी प्रखर राष्ट्रवादी एवं कर्मठ व्यक्ति को सुहा सकता है ? इस परोक्ष राष्ट्रद्रोह की भर्त्सना कर निश्चय ही आवश्यक है। इसकी ओर से आँखें फेर लेना असंदिग्धत: कोई भी सुधी एवं जिम्मेदार कलमकार को शोभा नहीं दे सकता। कर्म और राष्ट्रप्रेम के लिए सर्वथा समर्पित डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी इसीलिए क्रिकेट के खेल की इस राष्ट्रव्यापी बुराई से सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन पर पड़ते दुष्प्रभावों की मुक्तकंड भर्त्सना करने में रंचमात्र भी परहेज

नहीं करते।

ऐसा नहीं है कि कर्म के प्रति ऐसी दृढ़ निष्ठा के दर्शन डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी द्वारा 'रैन बसेरा' में प्रकाशित सम्पादकीय लेखों में ही होते हैं। सच तो यह है कि कर्मयोगी डॉ. 'व्यथित' जी की हर रचना में यह कर्मनिष्ठा तत्वत: उपलब्ध रहती है। साहित्य की चाहे जिस विधा में वे अपनी रचनाधर्मिता को मूर्त रूप देने लगते हैं, उसमें सहज स्वभाविक ढंग से कर्म के प्रति उनकी अव्याहत निष्ठा प्रतिबिम्बित हो उठती है। दीर्घ कलेवर वाली उनकी रचनाएँ ही नहीं, अत्यन्त लघुकाय उनकी रचनाएँ भी कर्म की विजय का ही उद्घोष करती हैं।

सम्पादक के रूप में डॉ. 'व्यथित'जी बहुत ही सन्तुलित गम्भीर एवं खोजी प्रकृति के रूप में पाये जाते हैं। प्रतिमाह सम्पादकीय लिखने के पहले डॉ. साहब एक खोजी सम्पादक के रूप में भी पाठकों के सामने आते हैं। 'रैन बसेरा' के फरवरी 1998 के अंक में 'राष्ट्रीय स्वाधीनता के सम्दर्भ कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण गम्भीर बातें' के अन्तर्गत अनेक छिपे या तोड़े मरोड़े गये तथ्यों को उद्घाटित करके अन्त में यह निष्कर्ष निकाला कि आजादी का जश्न मनाने का शुभ दिन 21 जून 1948 होना चाहिए न कि 15 अगस्त।

आधुनिक सम्पादकों की भांति डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी ने अपने लेख छपवाने की गर्व से या महज सम्पादक कहलाने के ही लिए सम्पादन कार्य नहीं किया। प्रत्युत इनके सम्पादकीय पाठकों को कुछ देते हैं तथा सोचने को विवश करते हैं। नवीनतम प्रकाशन सितम्बर 1998 के अंक के सम्पादकीय में व्यथित जी मित्व्ययिता की उपयोगिता एवं परिभाषा बड़ी ही सरल भाषा में बताया है तथा मिदनापुर रियासत के राजा एवं मालवीय जी की चिन्ता एवं ट्रेन पर बैठने के पश्चात राजा साहब के गम्भीर चिन्तन को पढ़कर उनका प्रभावित होना आदि बखूबी उद्धृत किया है। डॉ. 'व्यथित'जी ने इस में यह भी स्पष्ट किया कि मितव्ययिता कंजूसी नहीं है। दोनों में बड़ा अन्तर है, यदि मित्तव्ययिता पूरब हैं तो कंजूसी

पश्चिम।

सम्पादकीय के अन्तर्गत डॉ. 'व्यथित'जी ने अधुनातन समस्याओं को भी अपना विषय बनाया है। इस देश और प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों तथा उनके गावों की दुर्दशा का वर्णन दिसम्बर 1997 के अंक में ''**स्वर्ण जयन्ती वर्ष**'' में भी विकास की बाट जोहता-एक प्रखर स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानी का गाँव इस शीर्षक से किया है। 'जन संख्या विस्फोट एवं प्रदूषण की समस्या','टूटता परिवार-बिखरते मूल्य' भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का मूलाधार-त्याग आदि ऐसे महत्वपूर्ण, उपयोगी एवं गम्भीर विषयों को अपनी सम्पादकीय विवेचन बनाया है।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी की दूसरी गद्यकृति मन्थन है। यह 'रैन बसैरा' में प्रकाशित सम्पादकीय विचारों का संग्रह है। इसमें 'व्यथित'जी एक गम्भीर चिन्तक एवं मनीषी के रूप में पाये जाते हैं। अपने देश के प्रचलनों रीति-रिवाजों, संस्कृति, परिवार आदि के हामी लेखक ने 54 विभिन्न विचारणीय विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है। इसमें व्यथित जी ने प्रत्येक क्षेत्र को छुआ है किन्तु विस्तार मय वर्णन सम्भव नहीं है।

डॉ. 'व्यथित'जी 'भारतीय-संस्कृति का मूलाधार' में भोगवाद के स्थान पर त्यागवाद की आवश्यकता पर बल दिया गया है। संस्कृति के डगमगाते पाँव में आध्यात्मिकता के भारतीय संस्कृति का उत्स माना गया है। परिवार सम्बन्धी विषयों में संयुक्त परिवार की वकालत की गयी है। संस्कार मनुष्य के लिए आवश्यक बताये गये हैं। चारित्रिक-प्रदूषण रोकने के लिए रामचरित मानस को आधार माना गया है।

काव्य या साहित्य का उद्देश्य यश और अर्थ की प्राप्ति भी होती है। इसे कौन नहीं जानता कि बड़ी-बड़ी संस्थाएँ 'ऊँची सीढ़ी वाले' साहित्यकारों को प्रमुखता से सम्मानित एवं पुरस्कृत करती हैं। डॉ. 'व्यथित' जी अपने सीमित संसाधनों में ही सत्पात्र साहित्यकारों को चाहे वह जहाँ का भी हो बिना किसी प्रकार का भेदभाव

किए प्रशस्ति-पत्र अंगवस्तम् तथा धन देकर सम्मानित करतें हैं। हिन्दी साहित्य गरिमा पुरस्कारों के अन्तर्गत देश के कई साहित्यकार सम्मानित किए गए। डॉ. 'व्यथित'जी ने डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद उ.प्र. के कुलपति डॉ. अंगनेलाल की अध्यक्षता में सम्पन्न साहित्यकार सम्मान समारोह में अनेक साहित्यकार सम्मानित किए गए। इस प्रकार डॉ. 'व्यथित' साहित्यकारों का सम्मान कर उनका सुह्यद होने का प्रबल प्रमाण देते हैं।

डॉ. 'व्यथित'जी ने भारतीय समाज को पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के मृगजाल से मुक्त कराने हेतु अपनी सशक्त लेखनी उठाई है। छिन्न-भिन्न होती कौटुम्बिक परम्परा उनके मानस को सहस्त्र सर्प-दंश सी पीड़ा देती हैं, भारत की अनमोल धरोहर, सादा जीवन, उच्च विचार को पाश्चात्य की भौतिकवादी कालुषित सभ्यता निगल जाय, या हानि पहुँचाए ये उन्हें सहन नहीं। डॉ.जयसिंह 'व्यथित'जी भारतीय संस्कृति की अस्मिता एवं आस्था के अग्रदूत कवि हैं । कविता ही उनकी आत्मा की आवाज है। उनकी काव्य मन्दाकिनी समाज व देश को अपने प्रवाह में समेटे युग की धरा पर प्रवाहित हैं। अनुभूति लहरों के कल-कल नाद से युग की पुकार सुनाई देती हैं। काव्य मन्दाकिनी सतत प्रवाहित, न कही अटकी न कभी रुकी। कभी प्रचण्ड रूप में हर-हर की गूंज करती, तटों को दहलाती चली, तो कभी शान्त रूप में मन्थर गति से बलखाती व इठलाती चली। यही तो प्रकृति का अनमोल उपहार है।

'व्यथित'जी मात्र हिन्दी के ही हस्ताक्षर नहीं हैं। उनकी लेखनी अवधी, भोजपुरी, गुजराती एवं लोकभाषाओं पर शाधिकार भ्रमण करती है। उन्हेंने सुन्दर गद्य पत्र और पावन पद्य-पुष्प माँ सरस्वती के चरणों में अर्पित किये हैं। जिसकी दिव्य सुंगध से सरस्वती का मन्दिर सुरभित एवं सुशोभित हैं। व्यथित जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है, उनका जितना अधिकार गद्य साहित्य के सृजन में है उतना ही अधिकार उनका काव्य पर है। कविता के संदर्भ में गीत, ग़ज़ल, छंद, लोकगीत,

कवित्त, सवैया, छप्पय, दोहा, चौपाई आदि का उन्हें शास्त्रीय ज्ञान है तथा इन छन्दों का इन्होंने विपुल मात्रा में प्रयोग किया है।

काव्य सृजन में उन्होंने-मुक्तक तथा प्रबंध दोनों ही काव्यों का सृजन किया है। महाकाव्य तथा खण्डकाव्य उनके प्रिय विषय रहे हैं। प्रबंध काव्य के निर्माण के लिए एकाग्रता, अध्ययन गांभीर्य, विषय की पकड़ छन्द का आधिकारिक ज्ञान अपेक्षित है और डॉ. 'व्यथित'जी में ये सभी सामर्थ्य अन्तर्हित हैं।

एक और बात ध्यातव्य यह है कि व्यथित जी ने कभी दृष्टि संकोच तथा मानसी-संकीर्णता को प्रमुखता नहीं दी। साहित्य के उदात्तवादी अभिगम में उनकी रूचि रही है और यही कारण है उनके सृजन में मानवीय संवेदनाएं उदारता, परोपकार, सर्वकल्याण, दया, क्षमा जैसे उदात्तभाव सन्निहित हैं।

डॉ. 'व्यथित'जी जल मध्य कमल के समान, सांसारिक विकारों से निर्लिप्त, विषम संकट पूर्ण परिस्थितियों में भी साकार और सार्थक भूमिका निभाने में सक्षम रहे हैं। संकीर्णता, सम्प्रदायिकता, गुटबन्दी के त्रिताप उन्हें नहीं व्यापे। स्वार्थवाद, ईर्ष्या-द्वैष, रंग-भेद, भाषा-भेद, धर्म-भेद आदि के विष से दूर एक निर्विकार-निर्लोभ, निर्लिप्त, संत की भाँति एक मानवीय सृष्टि की रचना में सतत, मन वचन कर्म से तपस्या लीन रहे। राजनैतिक दाँव पेंच, जातिगत धर पटक, दलगत उलट-पलट, साम्प्रदायिक दंगे, धार्मिक कोलाहल आदि विसंगतियाँ न तो उन्हें कभी उद्वेलित करने में सफल हुइ और न ही वह कभी आन्दोलित ही हुए। मंदिर-मस्जिद का विवाद, बम्बई दंगे, अयोध्या, मुजफ्फर नगर की त्रासदी आदि कितनी घटनाएँ है जिनसे मानव मात्र डाँवाडोल हो गया। पर 'डॉ. व्यथित'जी ने कभी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। अपने पथ पर अड़िग रहे। धू-धू धधकती ज्वाला हो या कठोरतम ओला वृष्टि, चिलचिलाती धूप हो या बसन्ती-मस्त-मलय, डॉ. व्यथित जी निर्लिप्त भाव से चन्दन का सौरभ बिखेर कर संसार को गौरवान्वित करते रहे। वे लोक-मंगल की भावना की सुरभि पग-पग पर लुटाते अपने जीवन पथ पर

अग्रसर हैं, **''चन्दन विष व्याप्त नहीं लिपटे रहत भुजंग''** की कहावत अपने उत्कर्ष दायिनी साधनापूर्ण जीवन से चरितार्थ कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के ग्राम्यांचल में सुलतानपुर से 20 कि.मी. दूर लँभुआ के पास बने प्रखर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. शीतला प्रसाद सिंह के बने विजय स्तंभ का है। जहाँ आज वह अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रहा है। पास ही मुरलीधर पुर गाँव में जन्में स्व. शीतल प्रसाद सिंह के जन्मस्थली पावन भूमि मुरली गाँव में 1942-43 में काँग्रेस का महाधिवेशन भी होने का गौरव प्राप्त हुआ था। जिसमें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, विजया लक्ष्मी पंडित, गोविन्द वल्लभ पंत, भारत कोकिला सरोजनी नायडू, लालबहादुर शास्त्री जैसी हस्तियों के साथ ही देश के कोने-कोने से साठ हजार स्वतंत्रता प्रेमी आये हुए थे। ऐसा जुझारू सैनिक जिसने कभी भी आत्मा की आवाज से खिलाफ समझौता नहीं किया और न कभी झुका। आज दुर्भाग्य है कि इस अमर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का गाँव मुरलीधरपुर तथा उसका परिवार आजादी के इस **'स्वर्ण जयन्ती वर्ष'** में भी उपेक्षा का शिकार बना हुआ अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रहा है। ताज्जुब है कि जहाँ स्वर्ण जयन्ती वर्ष में उत्तर प्रदेश सरकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के गाँवों को **'स्वर्ण जयन्ती गाँव'** घोषित कर विकास के सारे कदम उठाने की बात कहती है, वह मुरलीधरपुर विकास की मंजिल से कोसों दूर पड़ा पानी प्रकाश एवं संपर्क मार्ग के अभाव में अपनी दुर्दशा पर रो रहा है। यह बात ग्रामीण साहित्य डॉ. व्यथित जी की जुबानी नहीं लिखित है।

डॉ. व्यथित जी ने गुजरात हिन्दी विद्यापीठ के मुख पत्र 'रैन बसैरा' के माध्यम से उत्तर प्रदेश सरकार का भी ध्यान आकृष्ट कराया है, कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व शीलता प्रसाद सिंह के उपेक्षित मुरलीधरपुर गाँव के विषम में संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर पुन: योग्य निर्णय ले गाँव समाज को समुचित न्याय दिलाया।

साहित्य न सिर्फ अपनी अन्तरात्मा का दर्पण होता है समाज का, युग का भी

दर्पण होता है। डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी न सिर्फ हिन्दी वरन् गुजराती के भी सिद्धहस्त कवि हैं। उन्हें अनेकानेक सम्मानों से विभूषित किया गया है। अनेक सम्मानों के धनी डॉ. वयथित जी की लेखनी से गीत-निर्झर, युग-दर्पण, युग-चिंतन, आर्तनाद, घनश्याम विजय, कैकेयी के राम, दलितों का मसीहा आदि कृतियाँ अवतरित हुयी हैं। सार्थक साहित्य सामाजिक विषमता के समूल उन्मूलन का भगीरथ प्रयास करता है। उन्होंने आदिवासी जीवन के सम्यक् विकास हेतु कई पाठशालाएँ स्थापित कीं, जिसके लिए उन्हें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने साहित्य के उद्देश्य के बारे में वे डॉ. व्यथित जी कहते हैं - 'हम आधुनिकता की अंधी दौड़ में सदाशयता, आत्मीयता और पर दु:ख कातरता जैसी मानवीय भावनाओं को छोड़ते जा रहे हैं, जिसकी पीड़ा से सभी संत्रस्त हैं। हम साहित्य के माध्यम से मानव की जमीर को जगाना चाहते हैं।'' वे साहित्य के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि साहित्य कर्त्तव्य विमुख को कर्तव्य परायण बना देने का सिद्ध मंत्र था, है और रहेगा।

डॉ. व्यथित जी अपने को **'योग: कर्मसु कौशलम्'** का पक्षधर मानते हैं और वे युवाशक्ति से अपेक्षा रखते हैं कि आज के नौजवान जन सेवा और राष्ट्रसेवा को प्रधान लक्ष्य समझें और वह सद्साहित्य के सृजन एवं संरक्षण को ही मूर्तरूप दें।

डॉ. 'व्यथित' जी ने राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रसेवा, राष्ट्रभाषा-प्रचार के माध्यम से समाज को संगठित, और शक्तिशाली बनाने का एक महान कार्य किया है। डॉ. 'व्यथित'जी ने आजीवन भारत देश को परम वैभव के शिखर तक पहुँचाने का एक महान संकल्प किया है। डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी जीवन भर नवदीप की तरह स्वयं जलकर प्रकाश फैलाते रहे हैं। कर्तव्य के पथ पर कभी रुकते नहीं **'चरैवेति चरैवेति'** उपनिषद् का यह मंत्र मानो उनके जीवन में साकार हो गया है। शरीर का कण-कण जीवन का क्षण-क्षण, कार्य का पग-पग जन सेवा और राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित रहता है।

कुछ अंध धर्मावलंबियों का मानना है कि छुआछूत हिन्दू धर्म का हिस्सा है। जिसे डॉ. 'व्यथित' जी मानने को तैयार नहीं। छुआछूत एक पाप है, एक अभिशाप है, एक कलंक है। जब तक यह कलंक नहीं मिटेगा हम दुनिया के सामने सर उठा कर खड़े नहीं हो सकते। समाज के इस वर्ग को विश्वास दिलाते रहे हैं कि समाज में सब बराबर के हकदार हैं और हम उन्हें बराबर का हकदार बनाएँ।

पिछड़ों, आदिवासियों में अशिक्षा का अंधकार और दलित स्वरूप की पीड़ा से व्यथित डॉ. 'व्यथित'जी ने उनके लिए शिक्षा में अभिरूचि जगाने का स्तुत्य प्रयास किया है। डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी ने एक आदिवासी छात्रावास की स्थापना की जो शांतिसदन कुमार छात्रालय के नाम से अनेक आदिवासी छात्रों एवं अन्य पिछड़े जाति के छात्रों को आश्रय प्रदान करता है। दूरस्थ क्षेत्रों से विद्यार्थी छात्रावास में रहकर शिक्षा ग्रहण करते हैं।

गुजरात हिन्दी विद्यापीठ की अनेक कार्यों :

हिन्दी के उन्नति में संलग्न गुजरात हिन्दी विद्यीपीठ अनेक कार्यों को गति प्रदान कर रहा है, जिसका कुशलता पूर्वक संचालन डॉ. 'व्यथित'जी के द्वारा हो रहा है। इसके द्वारा हिन्दी के उत्थान में निम्नलिखित महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं, जो निशिदिन अपने प्रसार पथ पर अग्रसर हैं।

गुजरात हिन्दी विद्यापीठ द्वारा अनेक प्रचार परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। जिसमें विद्यार्थीयों में हिन्दी के प्रति रुचि जागृत हो। सरलता से पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए शिक्षार्थियों को प्रोत्साहन मिलता है। इसके अन्तर्गत कक्षा-4 से उपाधि परीक्षाओं तक का संचालन होता है तथा सभी परीक्षाएँ अच्छी तरह संचलित की जाती हैं। इन परीक्षाओं का संचालन डॉ. व्यथित जी जैसे मनीषी दृढ़ संकल्प, व्यक्तित्व के संरक्षण में किया जाता है। इस तरह विभिन्न परीक्षाओं के माध्यम से गुजरात हिन्दी विद्यापीठ अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन कर रही है।

प्रकाशन विभाग की स्थापना :

गुजरात हिन्दी विद्यापीठ के प्रचार-प्रसार एवं उद्देश्य पूर्ति के लिए प्रकाशन विभाग की आवश्यकता पड़ने लगी। अत: सन् 1992 ई. में गुजरात हिन्दी विद्यापीठ के प्रकाशन विभाग की स्थापना की गई। इसमें हिन्दी की प्रचार पुस्तकें, निम्न कक्षाओं से उच्चतर कक्षाओं तक की सहायक पुस्तकें आदि का प्रकाशन किया जाता है। अनेक साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन भी अब तक किया जा चुका है जो निम्न लिखित हैं-

बालकृष्ण (हिन्दी-गुजराती, खण्ड-काव्य), कैकेयी के राम (हिन्दी खण्ड काव्य), युगचिन्तन (हिन्दी-काव्य), नेताजी (हिन्दी-खण्ड-काव्य), समकालीन हिन्दी गज़लें (ग़ज़ल संग्रह), घनश्याम विजय (खण्ड-काव्य), मंथन (निबंध संग्रह), सुलोचना (खण्ड-काव्य), आदि प्रमुख हैं।

इसके अतिरिक्त 'रैन बसेरा' हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी होता है। किसी भी कार्य को प्रारम्भ कर उसे पूर्णता देने पर ही कार्य की परणति होती है। हिन्दी विद्यापीठ से जहाँ छात्र लाभान्वित होते हैं, वहीं पर हिन्दी को जन-जन में बसाने के लिए एक निरन्तर प्रवाह की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। अत: इस पत्रिका का प्रकाशन गुजरात हिन्दी विद्यापीठ के प्रकाशन विभाग द्वारा होने लगा। इस पत्रिका के सम्पादन का गुरूतर भार भी हिन्दी के अनन्य सेवक डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी के कंधों पर पड़ा। विभिन्न साहित्यकार जो अनेक कारणों जैसे-राजनीतिक, सामाजिक जातिगत आदि से हिन्दी जगत में सम्मान नहीं प्राप्त कर पा रहे थे, उनकी रचनाओं का प्रकाशन इस पत्रिका में नियमित रूप से हुआ जिससे अनेक रचनाआकारों का उत्साहवर्द्धन हुआ तथा अनेक नवोदित कवि प्रकाश में आए।

इस पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन 8 अक्टूबर 93 को ठाकोर भाई देशाई हॉल लॉ गार्डन में सम्पन्न हुआ। जिसका विमोचन राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री

चिमन भाई पटेल ने किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने 'रैन बसेरा' अनुशंसा करते हुए डॉ. व्यथित जी को अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी की अलख जगाने के इस महत्वपूर्ण कदम को अत्यन्त प्रशंसनीय बताते हुए धन्यवाद दिया।

सम्मान समारोहों का आयोजन :

डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, हिन्दी के साहित्य भंडार में श्री वृद्धि करने वाले प्रतिष्ठित साहित्यकारों के उत्साह संवर्धन के निमित्त गुजरात हिन्दी विद्यापीठ सम्मान समारोहों का आयोजन करती है। इस श्रृंखला में प्रथमत: 16 अक्टूबर सन् 1994 दिन रविवार को प्रथम **'हिन्दी गरिमा सम्मान समारोह'** का आयोजन किया गया। यह आयोजन शांति निकेतन हायर सेकेण्डरी स्कूल, ओढ़व, अहमदाबाद के प्रांगण में हुआ। इस समारोह में ऐसे साहित्यकारों को सम्मान प्रदान किया गया जिनके सर्जनात्मक जगत से साहित्य जगत पूर्ण परिचित नहीं था, तथा में साहित्यकार धूल में हीरे की तरह उपेक्षित पड़े थे। इस समारोह में निम्नलिखित साहित्य सेवी मनीषियों को सम्मानित किया गया था।

1. श्री आशुतोष पाण्डेय, पं. चम्पारण बिहार।
2. श्री रामचरण महेन्द्र, कोटा, राजस्थान।
3. श्री रमाकान्त शर्मा, अहमदाबाद।
4. डॉ. राजकुमार निजात, सिरसा, हरियाणा।
5. श्री सुरेश चन्द्रशर्मा, अहमदाबाद।
6. श्री राम अवदेश त्रिपाठी, अहमदाबाद।
7. डॉ. गणेश दत्त सारस्वत, सीतापुर (उ. प्र.)।
8. डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी, उज्ञैन (म.प्र.)।
9. डॉ. नवनीत भाई ठक्कर, अहमदाबाद (गुजरात)।

10. श्री यतीन्द्रनाथ त्रिपाठी, कानपुर उ.प्र.।

11. श्री जीतेन्द्रकुमार 'धीर', कलकत्ता, बंगाल।

12. डॉ. पारूकान्त देसाई, बड़ौदा, गुजरात।

13. डॉ. जगदीशश्वर प्रसाद, डाल्टन गंज, बिहार।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री प्रबोध भाई रावल (अध्यक्ष-गुजरात कांग्रेस समिति) ने की। समारोह का उद्घाटन डॉ. शंकर दयाल शर्मा (सांसद और अध्यक्ष-राजभाषा समिति नई दिल्ली) ने किया था। मुख्य अतिथि श्री शक्ति सिंहजी गोहिल (शिक्षा एवं वित्त राज्य मंत्री) श्री उपेन्द्र त्रिवेदी (सांस्कृतिक राज्य मंत्री, गुजरात), डॉ. राममनोहर त्रिपाठी (अध्यक्ष हिन्दी अकादमी महाराष्ट्र), श्री अम्बाशंकर नागर (अध्यक्ष हिन्दी अकादमी, गुजरात) तथा श्री कृपाशंकर सिंह (महामंत्री, महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस समिति) थे।

इस समारोह में साहित्यकारों को एक ताम्रपत्र-हिन्दी गरिमा प्रतीक, अंगवस्त्र, 501 रु. नगद तथा हिन्दी गरिमा सम्मान स्मारिका प्रदान की गयी थी।

द्वितीय सम्मान समारोह गुजरात हिन्दी विद्यापीठ द्वारा 12 मई 1997 ई. दिन सोमवार को आयोजित किया गया। यह सारस्वत सम्मान समारोह 'व्यथित' शांति साधना केन्द्र गहरवार ग्राम-विक्रमपुर, तेरयें-सुलतानपुर, उ.प्र. में अयोजित हुआ। इसमें दो प्रकार के सम्मान प्रदान किऐ गए- **'साहित्य महोपाध्याय'** एवं **'साहित्यश्री'** इस समारोह में साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान करने बाले निम्नलिखित साहित्य मनीषियों को सम्मानित किया गया-

1. श्री आशुतोष पाण्डेय, पं. चम्पारण, बिहार।
2. श्री आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' सुलतानपुर, (उ.प्र.)
3. श्री दूधनाथ शर्मा 'श्रीश' जौनपुर, उ.प्र.।
4. श्री दीन मुहम्मद दीन, मैनपुरी, उ.प्र.।

5. श्री कोमलशास्त्री, आम्बेडकर नगर, उ.प्र.।

6. डॉ. योगेश चन्द्र दुबे, चित्रकूट, म.प्र.।

7. श्री सुरेन्द्रनाथ त्रिपाठी, अहमदाबाद, गुजरात।

8. डॉ. अनुज प्रतापसिंह, अमेठी- उ.प्र.।

9. डॉ. महेश नारायण अवस्थी, इलाहाबाद, उ.प्र.।

10. डॉ. बाबू लाल गर्ग, कर्वी, उ.प्र.।

11. श्री मदनमोहन पाण्डेय 'मनोज' आम्बेड़कर नगर, उ.प्र.।

12. डॉ. सुशीलकुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु' गोरखपुर, उ.प्र.।

उपर्युक्त साहित्यकार 'साहित्य महोपाध्याय' सारस्वत सम्मान से सम्मानित किए गए।

1. डॉ. विद्यानारायण शास्त्री, भागलपुर, बिहार।

2. श्री बद्रीनारायण तिवारी, कानपुर, उ.प्र.।

3. श्री धनंजय सिंह, सुलतानपुर, उ.प्र.।

4. श्री हरिश्चन्द्र मिश्र, आम्बेडकर नगर, उ.प्र.।

5. डॉ. राजबहादुर द्विवेदी, फैजाबाद, उ.प्र.।

6. श्री महेन्द्र प्रताप सिंह 'गरूड़' सुलतानपुर, उ.प्र.।

उपर्युक्त साहित्यकार सेवियों को 'साहित्यश्री'की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस समारोह की अध्यक्षता डॉ. अंगनेलाल जी, (कुलपति अवध विश्वविद्यालय) ने की। मुख्य अतिथि श्री अरूण प्रताप सिंह (विधायक) थे। इस सम्मान समारोह में 'साहित्य-महोपाध्याय', 'साहित्यश्री' सम्मान पत्र, अंगवस्त्र, 501 रुपए नगद, सारस्वत सम्मान स्मारिका प्रदान की।

इस प्रकार गुजरात हिन्दी विद्यापीठ ने साहित्यकारों को सम्मान प्रदान कर उन्हें उत्साहित कर उनकी साहित्य सेवाओं को ध्यान में रखकर उन्हें संबल प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

विचार गोष्ठियों का आयोजन :

किसी समस्या के निवारण का या किसी विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालने का सबसे अच्छा माध्यम विचार संगोष्ठि है। विचार गोष्ठी में हर वर्ग के व्यक्ति, विभिन्न स्थानों के व्यक्ति के विचार एक जगह प्राप्त होने से निश्चित विषय पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। जिससे समस्या का समाधान एवं ज्ञान में अपूर्व वृद्धि होती है। गुजरात हिन्दी विद्यापीठ द्वारा समय-समय पर ऐसी गोष्ठियों का आयोजन होता रहता है, जिसमें साहित्यिक विषयों पर बिशद चर्चायें की जाती हैं।

इस प्रकार की प्रथम विचार संगोष्ठी का आयोजन 14 सितम्बर 1993 ई. को हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर हुई। इस विचार संगोष्ठी का विषय था-''**दीन हिन्दी या हिन्दी दिन**'' यह विचार गोष्ठी श्री राम अवधेश त्रिपाठी की अध्यक्षता में शान्ति निकेतन हा. से. स्कूल के प्रागंण में सम्पन्न हुई। इस विचार गोष्ठी में डॉ. अखिलेश भारद्वाज (नई दिल्ली) श्री मायाप्रकाश पाण्डेय (अजमेर), डॉ. जनार्दन पुजारी (बिहार), श्री मुकेशभाई परीख (गुजरात) आदि प्रमुख थे।

इस विचार संगोष्ठी में हिन्दी की दशा-अवदशा पर विचार व्यक्त किए गये। इसकी वर्तमान दशा पर प्रकाश डालकर उसके सुधार के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों पर प्रकाश डाला गया।

ग्रामीण साहित्यकारों की दशा से कौन परिचित न होगा। गाँव का कवि पारिवारिक क्लेश, आर्थिक अभाव, प्रकाश में आने असुविधा एवं वैचारिक वैषम्यता का शिकार होकर घुटनशील वातावरण में किसी तरह से साँसे लेता हुआ अपनी भावना को दबाए, साहित्य सेवा को छिपाए, जी लेने पर बाध्य होता है। इस समस्या को ध्यान में रखते हुए 12 मई 1997 दिन मंगलवार को गुजरात हिन्दी

विद्यापीठ की तरफ से एक विचार संगोष्ठी का आयोजन, व्यथित शांति साधना केन्द्र विक्रमपुर, सुलतानपुर में किया गया। इस विचार गोष्ठी का विषय था- **''ग्रामीण साहित्य कारः दशा एवं दिशा''** इस विषय पर निम्नलिखित साहित्य सेवियों ने भाग लिया तथा अपने विचार व्यक्त किए -

1. डॉ. अनुज प्रतापसिंह, सुलतानपुर, उ.प्र.।
2. डॉ. योगेश चन्द्र दूबे, चित्रकूट, म.प्र.।
3. डॉ. सुशीलकुमार पाण्डेय, गोरखपुर, उ.प्र.।
4. डॉ. गौरीशंकर पाण्डेय, फैजाबाद, उ.प्र.।
5. डॉ कोमलशास्त्री, आम्बेड़कर नगर, उ.प्र.।
6. श्री मथुरा प्रसाद सिंह 'जटायु' सुलतानपुर, उ.प्र.।
7. डॉ. विद्यानारायण शास्त्री, भागलपुर, बिहार।
9. डॉ. बाबू लाल गर्ग, कर्वी, उ.प्र.।
10. डॉ. ओंकारनाथ त्रिपाठी, आम्बेड़कर नगर, उ.प्र.।
11. श्री प्रभुनाथ शास्त्री 'प्रभु' चांदा, सुलतानपुर, उ.प्र.।
12. श्री आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' सुलतानपुर, उ.प्र.।
13. श्री रामबहादुर मिश्र, बारांबकी, उ.प्र.।
14. डॉ. राधिका प्रसाद त्रिपाठी, फैजाबाद, उ.प्र.

इन विद्वान वक्ताओं ने ग्रामीण साहित्यकारों की दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए उनकी समस्याओं पर विचार प्रकट किया तथा सुधार के उपायों को दर्शाते हुए उसे उपयोग में लाने के लिए जोर दिया।

राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों का आयोजन :

श्रव्य-दृश्य माध्यम संप्रेषण का अच्छा माध्यम है। जनमानस पर इसका अत्यन्त अनुकूल प्रभाव पड़ता है। अत: कवि सम्मेलन हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार के सबसे उत्तम साधन हैं। गुजरात हिन्दी विद्यापीठ द्वारा समय-समय पर राष्ट्रीय स्तर पर कवि सम्मेलनों का आयोजन होता रहता है।

इस संदर्भ में प्रथम कवि सम्मेलन का आयोजन 8 अक्टूबर 1992 शुक्रवार को सायं 4 बजे किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि श्री नरहरि भाई अमीन (शिक्षामंत्री-गुजरात) तथा श्री चिमनभाई पटेल (मुख्यमंत्री-गुजरात) थे। कवि सम्मेलन का संचालन श्री विजय तिवारी जी ने किया। यह आयोजन ठाकोर भाई देसाई होल लॉ गार्डन में आयोजित किया गया। देश के कोने-कोने से अनेक साहित्यकारों ने इस कवि सम्मेलन में भाग लिया तथा कार्यक्रम अत्यन्त सफलता से सम्पन्न हुआ था। इसकी सफलता का आंकलन इसी से किया जा सकता है कि स्वयं मुख्यमंत्री जी अपने अनेक कार्यक्रमों को रद्द करके डेढ़ घंटे तक काव्य संध्या का आनन्द लेते रहे तथा इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए डॉ. व्यथित को बहुत धन्यवाद दिया।

द्वितीय राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन 16 अक्टूबर 1994 ई. दिन रविवार को शांति निकेतन हा. से. स्कूल के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन हिन्दी अकादमी महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री राम मनोहर त्रिपाठी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संचालन भोजपुरी व हिन्दी के अनन्य हस्ताक्षर श्री आशुतोष जी ने किया। इस कार्यक्रम में देश के कोने-कोने से आए हुए लगभग पचीसों कवियों ने भाग लिया। प्रमुख कवियों में श्री रामचरण महेन्द्र, डॉ. रमाकान्त शर्मा, श्री रामअवधेश त्रिपाठी, डॉ. राजकुमार निजात, डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी, श्री जीतेन्द्रकुमार धीर, डॉ. जगदीशश्वर प्रसाद आदि रहे। कवि सम्मेलन रात भर चलता रहा तथा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

तृतीय राष्ट्रीय कवि सम्मेलन मई 1997 में उ.प्र. के सुलतानपुर जिले में विक्रम पुर नामक स्थान पर आयोजित किया गया। इस कवि सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. अंगनेलाल (कुलपति डॉ. राम मनोहर लोहिया, अवध विश्व विद्यालय, फैजाबाद) ने की। इसका संचालन आंबेड़कर नगर से पधारे हिन्दी व उर्दू के अनन्य साहित्य सृष्टा महाकवि डॉ. कोमलशास्त्री जी ने किया। इस कवि सम्मेलन के प्रमुख कवि निम्नलिखित रहे-

श्री दूधनाथ शर्मा 'श्रीश', श्री मथुरा प्रसाद सिंह 'जटायु', श्री आशुतोष पाण्डेय, श्री मदनमोहन पाण्डेय 'मनोज', श्री महेन्द्र प्रताप सिंह 'गरूड़', श्री सुमन सुलतानपुरी, श्री आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप', श्री संकटा प्रसाद सिंह देव, श्री स्वराज बहादुर सिंह 'अटल' श्री जुमई खाँ 'आजाद' श्री ओंकरनाथ त्रिपाठी, डॉ. राधा पाण्डेय, श्री वृजेशकुमार पाण्डेय 'इन्दु', चंचल जौनपुरी आदि।

कवि गोष्ठियों का आयोजन :

जनवरी 1993 में एक संगोष्ठी का आयोजन शांति निकेतन हायर सेकण्डरी स्कूल में आयोजित की गई। जिसमें उर्दू के कई साहित्यकारों ने भाग लिया। इस गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. रमाकान्त शर्मा जी ने किया। इसमें डॉ. भगवानदास जैन, डॉ. द्वारिका प्रसाद सांचिहर, डॉ. किशोर काबरा, गिरगिट अहमदाबादी आदि अनेक कवि मनीषियो ने भाग लिया।

अन्य काव्य गोष्ठी का आयोजन 'व्यथित'जी के निज-निवास व्यथित-शांति साधना केन्द्र पर हुआ। जिसके अध्यक्ष स्वयं डॉ. 'व्यथित'जी रहे। स्थानीय कवियों के अतिरिक्त अनेक नव कवियों ने इसमें भाग लिया तथा कविता के विभिन्न आयामों का श्रवण कर साहित्य विकास के शिखर पर पहुँचने का संकल्प लिया। इन काव्य गोष्ठियों के आयोजनों के द्वारा हिन्दी के विकास को गति देने में अहर्निश लगे रहते हैं।

डॉ. 'व्यथित'जी का समूचा जीवन प्रेम, ज्ञान और सेवा की त्रिवेणी के रूप में

प्रवाहित हो रहा है। डॉ. 'व्यथित'जी एक सच्चे दार्शनिक तथा ऋषि तुल्य समाजसेवी व्यक्ति हैं, जो आपके व्यक्तित्व एव कृतित्व से भी झलकता है। 30 जुलाई 1957 को गुजरात प्रदेश के अहमदाबाद नगर के म्युनिसिपल हिन्दी विद्यालय में शिक्षक के रूप में आपकी प्रथम नियुक्ति हुई। तब से लेकर आज तक निरन्तर विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से आप एक शिक्षक, प्रशासक, संस्थापक, सदस्य, एवं नि:स्वार्थ सेवाभावी कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते हुए अहिन्दी भाषी-क्षेत्र में अपने उम्र के इस पड़ाव में भी शिक्षा एवं हिन्दी का अलख जगा रहे हैं। आप कोई नि:स्वार्थ सेवाभावी कार्य के लिए 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' ने 1996 का 'अनुशंसा पुरस्कार' प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आपकी विविध आयामी एवं नि:स्वार्थ जनोपयोगी सेवाओं पर आधारित आम्बेडकर नगर के सिद्ध कवि डॉ. कोमलशास्त्री जी ने 'कर्मयोगी' नामक प्रौढ़ महाकाव्य रचकर आपकी साधना और तपस्या पर कवि समाज की स्वीकृति की मुहर लगा दी है।

डॉ. 'व्यथित'जी को अनेक साहित्यिक सम्मान मिल चुके हैं। 'दलीतों का मसीहा', 'युग-चिन्तन', 'बुढ़ापे की लकड़ी' कृतियों पर आप सम्मानित एवं पुरस्कृत हो चुके हैं। देश की अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं ने आप की साहित्यिक साधना का आकलन कर आपको मानद् उपाधियाँ प्रदान की हैं, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं-

(1) डॉ. आम्बेडकर राष्ट्रीय अस्मिता दर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन (मध्य प्रदेश) द्वारा ''कवि संत रैदास कवि रत्न'' सम्मान।

(2) विक्रमशिला विद्यापीठ भागलपुर (बीहार) द्वारा 'विद्यावाचस्पति' सम्मान।

(3) अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा (यू.पी.) द्वारा ''राष्ट्रभाषा रत्न'' सम्मान।

(4) डॉ. आम्बेडकर राष्ट्रीय अस्मिता दर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा ''भदन्त आनन्द कौशल्यान'' पत्रकारिता रत्न सम्मान।

(5) अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन , भागलपुर (बिहार) द्वारा ''हिन्दी साहित्य मार्तण्ड'' सम्मान।

(6) साहित्यलोक, प्रतापगढ़ (यू.पी.) द्वारा ''साहित्यश्री'' सम्मान।

डॉ. 'व्यथित' जी की लघु कथाएँ एक ओर समाज में फैले हुए दम्भ और पाखण्ड की पोल खोलती है, तो दूसरी ओर नवयुवकों का मार्गदर्शन भी करती हैं और राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा देती हैं। यत्र-तत्र इन कथाओं में ऐसा प्रखर व्यंग्य सन्निहित है, जो लक्ष्य को तिलमिला देता है। जिससे लेखक का मंतव्य सार्थक हो जाता है। कुछ कथाएँ इतिहास के संदर्भ में लिखी गयी हैं, जो अतीत की गहराइयों को प्रकाशित करती हैं। आज के अधिकांश नवयुवक क्यों पथहीन हो रहे हैं, डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी ने इस समस्या पर भी प्रकाश की किरणें विकीर्ण की हैं। यत्र-तत्र हास्य की पुहारें पाठकों को सराबोर कर देती हैं। डॉ. 'व्यथित'जी ने आज के समाज की समस्याओं को साकार करने में सफलता प्राप्त की है। लेखक की कल्पना शक्ति भी बढ़ी प्रखर है, जिसने कथाओं के ताने-बाने को मनोरम बना दिया है। कहानियों के अध्ययन से ऐसा लगता है कि डॉ. व्यथित जी ने समाज का कोना-कोना झाँका है और उसे अपनी गल्यों में भली भाँति आँका है। आज के सत्ता-जगत और अपराध जगत की धज्जियाँ जिस प्रकार इन कहानियों में उड़ाई गई है, उसके लिए लेखक बधाई का पात्र है।

डॉ. व्यथित जी की कहानियों का रूप विधान भी प्रशंसनीय है। उनमें पूर्वी अवधी की पूरी-पूरी छटा है। लेखक ने गाँवों की चौपालों में घुस-घुस कर शब्द राशि निकाली है। लेखकों द्वारा अवधी की यह शब्द राशि यदि प्रयुक्त न हुई तो वह लुप्त होती जायेगी। जिससे राष्ट्रभाषा हिन्दी के शब्द-भण्डार की भारी क्षति होगी। डॉ. व्यथित जी ने गँवई-गाँव और गलियारों में घूमते हुए मुहाविरों को पकड़

पकड़कर अपनी कथाओं का जाल बुना है, जिससे उन्हें प्राणदान मिल गया है। अन्यथा उनके मर मिटने की पूरी आशंका थी। फड़कती हुई ग्रामीण लोकोक्तियों से लेखक की भाषा चमक उठी है। मुहाविरे और लोकोक्तियाँ भाषा की वह आधार शिलाएँ होती हैं जिन पर भाषा का भवन टिका रहता है।

जो लोग ग्रामीण भाषाओं में साहित्य रचना देखकर नाक-भौं सकोड़ते हैं, वे भ्रम के शिकार तो हैं ही, हीन भावना के भी मारे हैं। यह बात वैसी ही है, जैसे कुछ लोग अंग्रेजी के समक्ष हिन्दी में बोलना अपनी अयोग्यता भाँपते हैं। जो लोग राष्ट्रभाषा हिन्दी को खड़ी बोली का पर्याप्त समझते हैं, उन्हें भी दिशा भ्रम है। राष्ट्रभाषा हिन्दी का शब्द-जाल जब हिन्दी की सभी बोलियाँ-ब्रज, खड़ी बोली, बुंदेली, राजस्थानी, अवधी, भोजपुरी, और उर्दू आदि की प्रचलित शब्दावली से बुना जाएगा तभी पूरा होगा। जिसके लिए सभी बोलियों में साहित्य रचना अपेक्षित है। यही नहीं हमारी राष्ट्रभाषा को भारतवर्ष की समस्त भाषाओं बंगला, गुजराती, पंजाबी, तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम आदि से भी यथावश्यकता शब्दग्रहण करने पड़ेगें।

डॉ. व्यथित जी का अवधी गद्य पर अमोघ अधिकार है। मुझे लगता है कि उनके अवधी पद्य से उनका अवधी गद्य एक नहीं कई कदम आगे है। अवधी में गद्य का अभाव है। अत: उनका यह कदम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डॉ. व्यथित जी की अवधी पद्य और अवधी गद्य में पूर्वी अवधी की पूरी-पूरी छटा देखने योग्य है। इधर अवधी में अच्छा गद्य लेखन हो रहा है। डॉ. अखलाक अहमद (लखनऊ), कृष्ण मणि चतुर्वेदी, 'मैत्रेय', डॉ. आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप, मथुरा प्रसाद सिंह 'जटायु' (सुलतानपुर), डॉ. राघवबिहारी सिंह (हैदरगढ़), त्रिभुवन नाथ शर्मा 'मधु' (बाराबंकी) आदि का अवधी गद्य इस तथ्य का प्रमाण है। इसके पूर्व-चतुरान्दजी ने फैजाबाद से 'अवधी' पत्रिका निकाल कर अवधी गद्य की बड़ी सेवा की है।

डॉ. व्यथित जी की कर्मोपासना साहित्यकारों और सुधी सामाजिकों द्वारा

समय-समय पर निरन्तर पुरस्कृत भी होती रही है।

(1) गुजरात की प्रमुख दलित संस्था जागृति एज्युकेशन ट्रस्ट द्वारा 'दलितों का मसीहा' प्रबन्ध काव्य के लिए दिनांक 10 अप्रैल 1992 को जयशंकर सुंदरी हाल, अहमदाबाद में तत्कालीन गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष श्री मनुभाई परमार के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया।

(2) दहिसर बांबे में श्री गोस्वामी साहित्य मंच द्वारा दिनांक 26-12-96 को नटराज की कांस्य प्रतिमा के साथ सम्मानित किया गया।

(3) डॉ. आम्बेड़कर राष्ट्रीय अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी उज्ञैन (म.प्र.) द्वारा 14 अप्रैल 1994 को 'कवि संत रैदास कवि रत्न' की मानद् उपाधि से विभूषित किया गया।

(4) साहित्य लोक परियांवा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) द्वारा 1994 को 'साहित्यश्री' की मानद् उपाधि से विभूषित किया गया।

(5) मानस-संगम, कानपुर द्वारा 'कैकेयी के राम' खण्ड-काव्य पर युग तुलसी पं. रामकिंकर उपाध्याय के कर कमलों द्वारा दिसम्बर 1994 को ताम्रपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

(6) 'राष्ट्रभाषा रत्न' का सम्मान अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनंदन समिति, मथुरा, उ.प्र. द्वारा 30 जनवरी 1994 को सम्मानित किया गया।

(7) 'विद्यावाचस्पति' (पी-एच.डी.) की मानद उपाधि 1995 में विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा सम्मानित।

(8) भदंत आनंद कौशल्यायन पत्रकरिता रत्न से उज्ञैन आम्बेडकर अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित।

(9) 'हिन्दी साहित्य मार्तंड' की उपाधि (अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन, भागलपुर, बिहार) से सम्मानित तथा राज्य सरकारों द्वारा प्रदत्त पुरस्कार 'युग

चिंतन' (काव्य-संग्रह) गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित। 'बुढ़ापे की लकड़ी' कहानी-संग्रह-गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा सम्मान। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मानित। स्थानीय लोगों द्वारा भी स्नेह सम्मान व प्रशस्ति-पत्र अनेकों बार प्राप्त हो चुके हैं।

डॉ. 'व्यथित'जी ग्रामीण क्षेत्र में मार्ग दर्शन का कार्य निरन्तरता करेत आ रहे हैं। क्या कृषि, क्या उद्योग, क्या वृक्षारोपण, क्या मत्स्यपालन सब में डॉ. 'व्यथित'जी समाज का मार्गदर्शन किया है। डॉ. 'व्यथित'जी ने अच्छी अच्छी लाभ प्रदाई जड़ी बूटियों की खेती के लिए लोगों को प्रोत्साहन किया। कई लोगों को प्रोत्साहन दे कर इस कार्य को करने का अभियान चल रहा है। डॉ. 'व्यथित'जी के माध्यम से क्षेत्रीय जनता को फोन की सुविधा मिल रही है। इस व्यवस्था में डॉ. 'व्यथित'जी ने द्रुतगति से फोन केन्द्र (एक्सचेन्ज) की स्थापना हेतु भव्य भवन का निर्माण कराकर स्थापित कराया है। आपका प्रवास चिकित्सालय की स्थापना, अच्छे विद्यालय की स्थापना, वृद्धों अनाथों, विकलांगो की सेवा हेतु अनेक कार्यक्रमों को सफल करने में उपक्रम 'व्यथित' जी के अग्रिम कार्य है। यहाँ तक की समाज में कुछ ऐसे वर्ग हैं, जिनका भविष्य अन्धकार मय है, उनके बारे में 'व्यथित'जी ने अनेक भले कार्यक्रमों का आयोजन कर रखा है।

डॉ. जयसिंह का यह उपनाम उनके भीतरी व्यक्तित्व का सहज परिचय है। हिन्दी (ब्रजभाषा) के चिरस्मरणीय सन्त कवि सूरदास का एक पद-**'निशिदिन बरसत नैन हमारे।'**

वही हाल आज हमारे इस लोकप्रिय कविवर डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी का भी है। होश सँभलते ही 'व्यथित'जी ने अपने को व्यथा सागर में ही पाया। उनकी यह आजन्म व्यथा, उनकी चारित्रिक महानता, वैचारिक सौन्दर्य, भावपरक सिद्धियों और पराक्रमी साधनाशीलता के ही सुपरिणाम हैं। यह व्यथा सुखद भी है। ये आँसू, मीरा के आँसुओं से तालमेल रखने वाले होते हैं। ये आँसू भगवान के श्री

चरणों में इस पुण्यश्लोक कवि को पहुँचा देने में भी समर्थ होते है। अत:इसका महत्व उच्चस्तरीय है, अत्यन्त दिव्य भी है।

कवि की व्यथा सत्यलोक की ओर इंगित करने वाली होती है, सायुज्य पंथ का मार्ग सन्धान करनेवाली होती है। पुरुषोत्तम योग साधना में सदा योजनाबद्ध तरीके से तत्पर सौभाग्यशाली मानवपरिजातों में ही इस प्रकार की व्यथा देखने को मिलती है। यह व्यथा भीतर प्रखर रही है - गाँधीजी में रवीन्द्रनाथ में, योगी अरविन्द में, स्वामी विवेकानंद में, यही व्यथा प्रखर है-सभी धर्म-गुरुओं, तीर्थङ्कारों, पैग़म्बरों में भी। भगवान की अलौकिक कृपा जिन पर अमृत वर्षा करने लग जाती है, ऐसे मानव रत्नों के भीतर ही इस प्रकार की आध्यात्मिक परम तेजस्वी व्यथा प्रखर हो उठती है।

भारत की दीर्घकाल से चली आ रही यह दुर्दशा देखकर ही कवि आज व्यथित है। भारत को 'आर्यभूमि' कहा गया है। यह कृषि प्रधान देश है, न कि व्यापार प्रधान या उद्योग प्रधान, या राजनीति प्रधान यहाँ के सारे कार्यकलाप ऋषित्व साधना के रूप में ही बीतते रहे हैं। चाहे आपके दैनिक कार्यकलाप कुछ भी हों।

डॉ. 'व्यथित'जी अपने जीवन में अनेक आघातों-प्रत्याघातों को सहा है और शिव बनकर जीवन के विष को पिया है। उनका मौन, उनकी सहिष्णुता किसी भक्त कवि की याद दिलाती है-

''सभी जिल्लतें, सभी नफरतें, सभी चाहतें, सभी अजमतें,
दिलो जाँ से मुझको कबूल है जो तू मेरी झोली में डाल दे।''

उपर्युक्त पंक्तियों के पुरस्कर्ता और पोषक हैं- डॉ. व्यथित। उनकी संवेनदशीलता सहज में खींच लेती है। दूसरों की पीड़ा सुनकर वे द्रवित हो जाते हैं और दु:खी व्यक्ति के कष्ट को अपनी सीमा में दूर करने का प्रयास कर उसे साहस और धैर्य प्रदान करते हैं। उनमें कई ऐसे गुण हैं जिनसे आने वाली पीढ़ी को बराबर प्रेरणा मिलती रहेगी। हिन्दी जगत में बहुत से कवि और रचनाकार हैं, जो रचनाकर्म से

जुड़े हैं लेकिन ऐसे रचनाकार बहुत ही कम हैं जिनकी रचनाओं में उनके 'व्यक्तित्व-आभा' की छाप मिलती है। अन्य रचनाकारों से डॉ. 'व्यथित' जी में अन्तर यह है कि उनकी रचनाओं ने ही उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया है। उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि 'अकबर इलाहाबादी' की ये पंक्तियाँ उनके ऊपर पूर्णत: चरितार्थ होती हैं-

''सखुन उनसे संवरता है- सखुन से मैं संवरता हूँ।''

इसी बात को रीति कालीन मुक्तधारा के समर्थ कवि घनानन्द ने इस रूप में कहा है-

''लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोंहि तो मेरी कवित्त बनावत''

प्राप्त तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी एक अत्यंत संवेदनशील, भावुक एवं सहृदय व्यक्ति है, जो मानसिक तौर पर अत्यंत समृद्ध एवं गहन व्यचारिकी से जुड़े हुए हैं। मानव मात्र के लिए उनके अंतस्थ: में उदारवादी चेतना का निर्झर झर रहा है। परोपकार; मैत्रिभाव, अनुदान, प्रोत्साहन, प्रेरणा, शुभाकांक्षाएँ तथा हर युग एवं सक्षम् समादर्णीय व्यक्ति के प्रति उनकी आत्मीयता तथा लगाव सर्वत्र आभाषित होता है। डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी के व्यक्तित्व में इतर ध्रुवों का सामंजस्य देखा जा सकता है। जिसमें एक ओर तो वे पुरातनवादी, रूढ़ परंपराओं एवं पौराणिक आस्थाओं के प्रति श्रध्धावान हैं, तो दूसरी ओर 21 वीं शताब्दी के प्रारंभ का अधुनातम् बोध उनके चिन्तन में विध्यमान है। उन्होंने महाकवि कालिदास के युक्ति **'पुराण मित्येती न साधु सर्वम्'** के अनुसार अपने वैचारिक स्थापन नियत किये हैं। भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रियता के प्रति अत्यंत-श्रध्धावान होकर डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी ने देवी देवताओं और विविध-अवतारों के उच्चदृश्यों से प्रेरणा ग्रहण किए हैं। सीता जी के अख्यान को लेकर उन्होंने नारी प्रत्तारणा तथा नारी शोषण के प्रति अपनी आवाज बुलंद की समसामयिक संदर्भों को सही दिशा में उत्प्रेरित किया है।

व्यवहारिक परिवेश में तीन रूप सहज ही सामने आते हैं

* पहला रूप उनका सरल, सहज और सर्वसुलभ ऐसा ओजस्वी व्यक्तित्व जो अपने संपूर्ण परिवेश को सम्मोहित करता रहता है।
* दूसरा रूप उनकी गहन विद्वता का है, जहाँ उन्होंने वैद्य साहित्य से आधुनिक साहित्यकारों एवं दार्शनिक विचारकों का गंभीर अध्ययन किया था।
* तीसरा रूप एक कलाकार के रूप में सामने आता है, जहाँ वे निच्छल एवं सहज परिपक्व कवि के रूप में प्रस्तुत होते हैं। डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी सर्वांग में एक ऐसे विरल व्यक्ति हैं, जो अनन्त गरिमाओं से सिद्ध होने पर भी अभिमान का स्पर्श नहीं करते- **''रहीम हीरा कब कहे लाख टका मेरो मोल''** अर्थात् विद्वान और प्रतिष्ठापित व्यक्ति अपनी विशिष्ट महत्ता को स्वयं ज्ञापित नहीं करते। अपने अध्ययन, मनन और अध्यापन के निष्ठा से जुड़े हुए डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी साहित्य और शिक्षा के प्रति उतने ही उदार और आत्मीय हैं, जितने साहित्य रचना अथवा कला प्रवृतियों के संदर्भ में।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी यायवर के रूप में समग्र देश का पर्यटन कर चुके हैं। जहाँ से उन्हें सर्वोत्तोमुख ज्ञान तथा वैचारिक बोध-प्राप्त हुआ है।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी चुनौतियों से कभी डिगे नहीं है, अवरोधों से कभी रूके नहीं है, वर्जनाओं और बाध्यताओं के आगे कभी सिर नहीं झुकाया है। सामाजिक सरोकार हो अथवा साहित्यिक अनुष्ठान, व्यथित जी ने पूर्ण आस्था और समर्पित सद्भावों के साथ अपने मूल्यों पर कटिबद्ध रहे हैं। उनके लिए कहा जा सकता है-

''आँधियाँ लाख समन्दर उलांध कर आई,
हमारे सामने आई तो सर झुकाया है,
हम न टूटे कभी, हारे नहीं हिम्मत अपनी,

गर्ज में हैं कि जो चाहा है वही पाया है।
बिजलियाँ हमने हथेली से मसल कर रख दी,
लाख तूफान बवंडर न हमें रोक सके,
हमको जाना था वहीं पहुँचे, वही कार्य किया,
हम जमाने से नहीं हमसे जमाना है यह।''

शिक्षा संसार में अपने कीर्ति स्थंभ ज्ञापित करने वाले माँ सरस्वती के वरद पुत्र डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी अपने आप में एक विरल व्यक्तित्व हैं।

प्रस्तुत अध्याय से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी का कार्यक्षेत्र अत्यंत विस्तृत रहा है तथा उनकी बहुआयामी उपलब्धियाँ उनकी व्यक्तित्व को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

अगले अध्याय में डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी के सामाजिक दायित्व पर प्रकाश डालेंगे जिनसे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा का भी ज्ञापन होगा।